बाल-विज्ञान

नैतिक शिक्षा भाग-5

ॐ

ह्रीं

लेखक :

प.पू. विश्वहितैषी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य, युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

प्रकाशन :

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग : परम पूज्य निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज की 'रजत पुण्यतिथि वर्ष' के तथा प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के '57वी जन्म जयन्ती' के अवसर पर

कृति : बाल विज्ञान नैतिक शिक्षा भाग-5

कृतिकार : प.पू. गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

संस्करण : द्वितीय, 2019

प्रतियाँ : 1000

पुण्यार्जक : स्व. सिंघई बाबूलाल जी जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन श्रीमती अंगूरी जैन
श्री अनिल कुमार जैन गुड़वारी, गुनौर (म.प्र.)

मूल्य : 20/-

मुद्रक : नवजीवन प्रिन्टर्स, निवाई (टोंक-राज.)
फोन : 01438-222127 मो. : 9414348316
E-mail : navjeewan.jain@gmail.com

प्राप्ति स्थान :

1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) सम्पर्क सूत्र-पं.वीरेन्द्र जैन मो. 9754803232
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी बीना-470113 जिला-सागर (म.प्र.) मो. 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुर, अहमदाबाद-380013 (गुजरात) मो. 9825900124

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
	दो शब्द	7
	श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय	8
	गुरुवाणी	9
	पू. आ. श्री का परिचय	
	प्रार्थना	10
1.	लोक	11
2.	ऊर्ध्वलोक	14
3.	मध्यलोक	20
4.	अधोलोक	24
5.	काल	30
6.	भोगभूमि	34
7.	कर्मभूमि	38
8.	कुलकर	41
9.	शलाका-पुण्यपुरुष	46
10.	तीर्थंकर आदिनाथ	51
11.	लेश्या	54
12.	श्री लघु स्वयंभू स्तोत्र	57
13.	श्री गोम्मटेस-थुदि	60

दो शब्द

जिज्ञासा के पंखों पर सवार बालमन अपने कल्पना लोक में उड़ना चाहता है। यदि ऐसा हो सकता तो, अभिभावक उसके तर्कात्मक प्रश्नों की झड़ी से बचकर कुछ राहत जरुर अनुभव कर पाते। पर बालक है तो ऐसा, कि प्रश्न पर तर्क पर तर्क दागता ही चला जाता हैं। वस्तुतः यह उसकी आन्तरिक मन की उत्सुकता है जिससे वह अपने दृश्य जगत के सभी घटकों की तथ्यात्मक जानकारी पल भर में समेट लेना चाहता है। अपनी क्रिया में उसे बिलम्ब असह्य है। जीवन निर्माण की प्रक्रिया की नींव भरने का यह अनोखा समय है, जब हम चालकों के मन में धर्म संस्कारों की छाया और आस्था की भावना भर सकते हैं। जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके। धर्म संस्कार हीन जीवन का विकास हुआ भी तो वह पशु से कुछ अधिक नहीं होगा। पशुता ही उसके जीवन की कहानी होगी जो सभ्य समाज के अन्तर को रह-रह कर बेंधती रहेगी।

जीवन निर्माण करना हमारे हाथों में है। थोड़ी सी सावधानी से वह महान् देवता बन सकता है और असावधानी से राक्षस। हिरण्यक शिशु और हिरण्य गर्भ में सिर्फ खरे और खोटे का ही अन्तर है। हिरण्य तो दोनों हैं।

बालकों के समुचित विकास को ध्यान में रखकर परमपूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने **बाल विज्ञान** की रचना करके भावी समाज निर्माताओं के जीवन में महान् उपकार किया है। अत्यन्त सरल सुबोध शैली में प्रश्नात्मक पद्धति से रचित इन पाँच भागों से बालकों को धर्मतत्व की गहरी जानकारी हो सकेगी। इससे वे अनावश्यक मानसिक श्रम से भी बच सकेंगे। महाराज श्री के इस उपकार के प्रति समाज भी सदैव कृतज्ञ रहेगी। **बाल विज्ञान** के चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति यह पांचवा भाग आपके हाथों में सौंपते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है। इसके प्रकाशन में समस्त सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं आशा है कि आप इस परम्परा को आगे भी निर्वाह करते रहेंगे।

गुरुचरण सेवक - धन्यकुमार राजेश

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय

विद्यापीठ की स्थापना 1988 में हुई थी। इसका प्रारम्भ में अस्थाई संचालन कार्यालय जैन चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड में रखा गया था। लेकिन वर्तमान में स्टैण्ड रोड़, कीर्तिस्तंभ परिसर में एक विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। इस विद्यापीठ की स्थापना दिगम्बर जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के सदुपदेशों से प्रभावित होकर की है तथा यह एक संरक्षक मंडल के मार्गदर्शन में प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा संचालित है कमेटी के चुनाव की विधिवत् व्यवस्था है। इसके संचालन में दिगम्बर जैन समाज के अतिरिक्त अन्य किसी वर्ग से या शासन से वित्तीय सहायता नहीं ली जाएगी।

विद्यापीठ का प्रमुख लक्ष्य जैन समाज को सुसंगठित करना, जैन आचार-धर्म संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करना, तद्नुरूप संस्थाओं की स्थापना एवं उनका संचालन करना (जैसे-प्रकाशन संस्थान, शोध संस्थान, छात्रावास, जैन विद्यालय, पाठशाला, व्रती आश्रम, जैन परीक्षा बोर्ड) प्रमुख लक्ष्य है जिससे जैन समाज की नई पीढ़ी धर्म संस्कारों से परिपूर्ण होकर धर्म, तीर्थ और व्रतियों की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेकर समाज सेवा कर सके। निराश्रित भाई-बहनों एवं विधवा बहिनों की सहायता हेतु योजनाएँ प्रारम्भ करने के प्रस्ताव हैं। सम्प्रति विद्यापीठ के अन्तर्गत 15 पाठशालाएँ चल रही हैं जिनमें 1200 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा की व्यवस्था हैं। अन्य पाठशालाओं को भी बोर्ड से संबद्ध होने की पूर्ण सुविधा हैं। सम्प्रति प्राइमरी, मिडिल एवं हाई स्कूलों के बच्चे उक्त संस्था में अध्ययनरत है।

विद्यापीठ प्रबन्धकारिणी अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार जैन एवं परम पूज्य बालयोगी, प्रज्ञाश्रमण आचार्य 108 विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से इसकी व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित करें। पाठशाला संचालक गण परीक्षा बोर्ड से संबद्धता हेतु शीघ्र आवेदन कर छात्रों को इस वर्ष परीक्षा में शामिल करें।

अध्यक्ष
वीरेन्द्र कुमार जैन
डोली रेडिमेड सदर बाजार, भिण्ड

गुरुवाणी

प्राचीन समय में हर मानव संस्कृति के अनुसार ही अपने जीवन को बनाता था, उस समय की गुरुकुल शिक्षाएँ थी। हर गुरुकुल में धर्म शिक्षा के साथ-साथ लौकिक शिक्षा दी जाती थी, ताकि विद्यार्थी अपने आपको पापाचरण से बचाकर सदाचार की ओर प्रवृत्त कर सकें। धर्माचरण पूर्ण शिक्षा ही प्राणियों को सुख शान्ति की जन्म जननी है।

बिना शिक्षा के सत्य ज्ञान नहीं हो सकता और सत्य ज्ञान के बिना जीवन पापाचरण से बचकर सुखी भी नहीं बन सकता-जब हम स्वयं सुखी नहीं बन पाये तो फिर परिवार, समाज, नगर, देश, राष्ट्र आदि को कैसे सुखी बना सकते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि मानव मात्र अपने को धर्म ज्ञान एवं आचरण से सुसंस्कारित करें। ताकि वे स्वयं को सुखी बनाते हुए विश्व के प्राणी मात्र को सुखी बनाने में मार्ग दर्शक हों। ऐसे ही प्राणियों से परिवार, समाज, राष्ट्र आदि में सुख शान्ति की आशा हो सकती है, दूसरे से नहीं।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर भिण्ड वर्षायोग 2016 में इस कृति का सृजन किया गया है। विश्वास है कि बाल विज्ञान भाग-5 आबाल वृद्धों को नैतिकता की जागृति के साथ-साथ दीपिका का काम करेगी। सभी धर्म प्रेमी सज्जन पूर्ववत् इसका समादर करेंगे।

ऊँ नमः श्री वीतरागाय नमः

श्री जिन मुखोद्भव श्रुताय नमः

परम निर्ग्रन्थ गुरुभ्यो नमः

– गणाचार्य विराग सागर

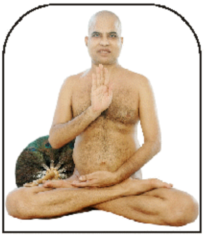

जीवन की महत्वपूर्ण झांकियाँ
परम पूज्य गणाचार्य
108 श्री विरागसागर जी महाराज

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई, 1963, गुरुवार (वैशाख शुक्ला 9, सवंत् 2020, पथरिया)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी) श्री कपूरचन्दजी जैन (समाधिस्थ पू. श्रमण श्री 108 विश्ववंद्य सागरजी)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर, मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुढ़ार, शहडोल (म.प्र.)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	:	प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी
मुनि दीक्षा	:	9 दिसम्बर 1983 (मगसर शु. 5 वि.सं., 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु	:	प.पू. निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
आचार्य पद	:	8 नवम्बर 1992 (का.शु. 13 वि.सं 2049) रविवार, द्रोणगिरी सिद्ध क्षेत्र (म.प्र.)
संयमी सृजन	:	आचार्य-9, मुनि-83, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-69, ऐलक-5, क्षुल्लक-25, क्षुल्लिका-32, कुल-227
प्रशिष्य	:	175 से अधिक

समाधि सल्लेखनाएँ- 89 तथा 19 सहयोग, अनेकों तिर्यंच

चातुर्मास : 1980 से 2018 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.) मढ़ियाजी (जबलपुर म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.) भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.), मूडबिद्री (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्गांव (महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), गाजियाबाद कविनगर (उ.प्र.), सम्मेद शिखरजी (झारखण्ड)।

साहित्य सृजनः 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय 'सर्वोदया संस्कृत टीका'

2. रयणसार ग्रन्थ पर 1300 पृष्ठीय 'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीका एवं लिंगपाहुड़ पर 'श्रमण प्रबोधनी' शीलपाहुड पर 'श्रमणसम्बोधिनी' टीका

3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।

4. शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ पर संस्कृत में चूर्णिसूत्र

5. प्राकृत भक्तियाँ

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर 75

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 50 से अधिक

सिद्धान्त वाचनाएँ: धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 7 पुस्तकें। (क्रम जारी है)

गोष्ठियाँ : विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश-वकील, डॉक्टर्स, शासनिक, सर्वधर्म सम्मेलन।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति अभियानः भिण्ड (म.प्र.) बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.) कारंजा (महा.) मेलचित्तामूर (तमिल) उद्गाँव (महा.) गाँधीनगर (गुजरात) लोहारिया (राज.) अजमेर (राज.) जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरी (म.प्र.) पथरिया (म.प्र.) भिण्ड (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), गाजियाबाद (उ.प्र.) सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) जिसमें 27 लाख से अधिक छात्र-छात्रायें व्यसनमुक्त शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावकसंस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौडगढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह, दिल्ली, भिण्ड।

न्यायालय प्रवचनः अजमेर, भिण्ड

पगविहार : 1,00,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर, झाँसी।

वृहत यति सम्मेलन एवं युगप्रतिक्रमण : जयपुर (राज. 2012), झांसी (करगुवा) (उ.प्र. 2017) (200 शिष्य, प्रशिष्य, अन्य साधु भी) श्रमण-श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापना।

प्रार्थना

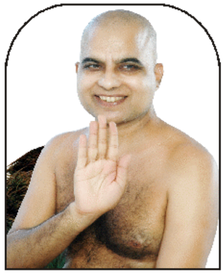

पू. 105 क्षु. श्री पूर्णसागर जी (आचार्य श्री विराग सागर जी)

पंच प्रभु को नमन करेंगे, भजन करेंगे जपन करेंगे।
कर्त्तव्यशील हम सदा बनेंगे, सत्पुरुषों का मार्ग गहेंगे।।

सूर्योदय से पूर्व उठेंगे, उठते ही प्रभु नाम भजेंगे।
दिया हुआ फिर पाठ करेंगे, तदनंतर गृह कार्य करेंगे।।

जिनेन्द्र प्रभु का दर्श करेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
अनछना जल काम न लेंगे, रात्रि भोजन त्याग करेंगे।।

खूब पढ़ेंगे मनन करेंगे, कभी किसी से नहीं लड़ेंगे।
व्यर्थ कभी नहीं बात करेंगे, दिया हुआ नित पाठ पढ़ेंगे।।

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, कभी किसी से नहीं डरेंगे।
गाली मुख से कभी न देंगे, मैत्री सब से नित्य करेंगे।।

निंदा किसी की नहीं करेंगे, पापों का हम त्याग करेंगे।
ब्रह्मचर्य व्रत हृदय धरेंगे, लालच से प्रभु दूर रहेंगे।।

सरल सत्य व्यवहार करेंगे, णमोकार नित जाप करेंगे।
सदाचार रसपान करेंगे, 'शीघ्र पूर्ण' भगवान बनेंगे।।

पाठ-1

लोक

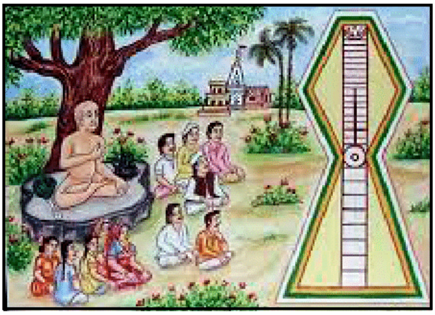

प्रश्न 1. लोक किसे कहते हैं?

उत्तर - आकाश के जितने हिस्से में जीवादि (जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल) छह द्रव्य पाई जाती हैं उसे लोकाकाश या लोक कहते हैं।

प्रश्न 2. लोक का आकार कैसा होता है?

उत्तर - लोक का आकार पुरुषाकार होता है जैसे कोई व्यक्ति अपने दोनों हाथों को कमर पर रखकर, दोनों पैरों को फैलाकर खड़ा हो जाए।

प्रश्न 3. लोक का विस्तार कितना है?

उत्तर - लोक का विस्तार 14 राजू लंबा, 7 राजू मोटा तथा नीचे अधोलोक में 7 राजू मध्य लोक में 1 राजू फिर ऊर्ध्वलोक के मध्य में 5 राजू तथा ऊपर 1 राजू चौड़ा है।

प्रश्न 4. लोक को किसने बनाया है?

उत्तर - लोक को किसी ने नहीं बनाया। यह तो अनादिकाल से था, है और अनंतकाल तक रहेगा।

प्रश्न 5. क्या सम्पूर्ण लोक में जीव पाये जाते हैं?

उत्तर - हाँ, सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सम्पूर्ण लोक में पाये जाते हैं। तथा शेष बादर एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रसनाली में रहते हैं।

प्रश्न 6. त्रसनाली किसे कहते हैं?

उत्तर – लोक के बीचों-बीच 13 राजू लंबी तथा 1 राजू चौड़ी जो नाली है उसे त्रसनाली कहते हैं। त्रसजीव इसके अंदर ही रहते हैं इसलिए इसका त्रसनाली सार्थक नाम है।

प्रश्न 7. लोक के कितने विभाग होते हैं?

उत्तर – लोक के 3 विभाग होते हैं – 1. ऊर्ध्वलोक, 2. मध्यलोक, 3. अधोलोक।

प्रश्न 8. लोक में चारों ओर क्या है?

उत्तर – वृक्ष की त्वचा के समान 3 वातवलय लोक को चारों ओर से घेरे हुए है।

प्रश्न 9. वातवलय किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर – वायु के घेरे को वातवलय कहते हैं। ये 3 प्रकार के होते हैं– 1. घनोदधि, 2. घन वातवलय 3. तनु वातवलय

प्रश्न 10. घनोदधि वातवलय किसे कहते हैं?

उत्तर – घनोदधि सघन जल मिश्रित वायु का घेरा घनोदधि वातवलय कहलाता है। इसका रंग गोमूत्र के समान है। इसकी मोटाई 20,000 योजन है।

प्रश्न 11. घनवातवलय किसे कहते हैं?

उत्तर – सघन वायु का घेरा घनवातवलय कहलाता है। इसका रंग मूंग के समान है यह भी 20,000 योजन मोटा है।

प्रश्न 12. तनुवातवलय किसे कहते हैं?

उत्तर – सूक्ष्म वायु का घेरा तनुवातवलय कहलाता है। इसका रंग अव्यक्त (अनेक रंग वाला) है इसकी भी मोटाई 20,000 योजन है।

प्रश्न 13. मुक्त जीव लोक में कहाँ रहते हैं?

उत्तर – लोक के अग्र भाग में मुक्त (सिद्ध) जीव, सिद्धालय में निवास करते हैं।

प्रश्न 14. मुक्त जीव भी क्या लोक के बाहर नहीं जा सकते हैं?

उत्तर – नहीं, जीवादि 6 द्रव्य लोक में ही पाई जाती है क्योंकि लोक के बाहर अलोकाकाश है जिसमें धर्मास्तिकाय द्रव्य का अभाव है इसलिए सिद्धजीव ऊर्ध्वगमन स्वभाव होने पर भी लोक के बाहर नहीं जाते।

प्रश्न 15. अधोलोक का आकार व ऊँचाई कितनी व कहाँ तक है?

उत्तर - अधोलोक का आकार वेत्रासन के समान है, तनु वातवलय से सुमेरू पर्वत की जड़ के नीचे तक है तथा इसकी ऊँचाई 7 राजू है।

प्रश्न 16. मध्यलोक का आकार व ऊँचाई कितनी व कहाँ तक है?

उत्तर - मध्यलोक का आकार झल्लरी के समान है सुमेरू पर्वत के बराबर 1 लाख 40 योजन की ऊँचाई है।

प्रश्न 17. ऊर्ध्वलोक का आकार व ऊँचाई कितनी व कहाँ तक है?

उत्तर - ऊर्ध्वलोक का आकार मृदंग के समान है। सुमेरू पर्वत से एक बाल का अंतराल छोड़कर ऊपर से प्रारंभ होकर अंतिम तनुवातवलय तक है। 1 लाख 40 योजन कम, 7 राजू ऊँचाई है।

प्रश्नावली

1. लोक किसे कहते हैं? तथा इसे किसने बनाया है?

2. त्रसजीव कहाँ रहते हैं?

3. लोक का आकार तथा विस्तार बतायें?

4. लोक में सिद्ध जीव कहाँ रहते हैं?

5. वातवलय किसे कहते हैं? इनके भेद लिखें?

✪✪✪✪✪

पाठ-2

ऊर्ध्वलोक

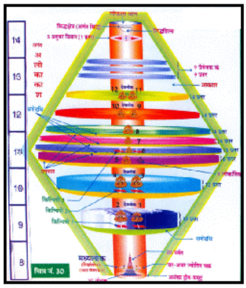

प्रश्न 1. ऊर्ध्वलोक किसे कहते हैं?

उत्तर - लोक के मध्य 1 राजू से लेकर ऊपर 1 राजू तक का भाग ऊर्ध्वलोक कहलाता है। इसका आकार मृदंगाकार (ढोलकवत्) होता है। जो ऊपर नीचे 1 राजू तथा मध्य में 5 राजू चौड़ा, 7 राजू लंबा और 7 राजू मोटा है। इसे स्वर्गलोक या देवलोक भी कहते हैं।

प्रश्न 2. ऊर्ध्वलोक को देवलोक क्यों कहते हैं?

उत्तर - क्योंकि यहाँ सभी संसारिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न तथा अनेक ऋद्धियों के धारी देव-देवियाँ अपने-अपने विमानों में निवास करते हैं।

प्रश्न 3. ऊर्ध्वलोक में क्या-क्या होता है?

उत्तर - ऊर्ध्वलोक में 16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश तथा 5 अनुत्तर विमान हैं तथा सबसे ऊपर सिद्धशिला है।

प्रश्न 4. विमानों में क्या होता है?

उत्तर - विमानों में सभी सुख-सुविधाओं युक्त साधन तथा प्रत्येक विमान में एक-एक अकृत्रिम जिनचैत्यालय होता है जिसमें विराजमान जिनेन्द्र देव (प्रतिमा) की सम्यग्दृष्टि देव पूजा-अर्चना करते हैं और मिथ्यादृष्टि देव भी कुलदेवता मानकर भक्ति पूजा करते हैं।

प्रश्न 5. ऊर्ध्वलोक संबंधी कुल कितने अकृत्रिम चैत्यालय होते हैं?

उत्तर - 84 लाख 97 हजार 23 अकृत्रिम चैत्यालय होते हैं।

प्रश्न 6. क्या स्वर्गों में सुख ही सुख होता है?

उत्तर - नहीं, स्वर्गों में संसारिक सुखों के अलावा एक-दूसरे की ऋद्धि, वैभव को देखकर अति तीव्र मानसिक दु:ख भी होता है।

प्रश्न 7. ऊर्ध्वलोक में कौन से देव रहते हैं?

उत्तर - भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष तथा वैमानिक देवों में से केवल वैमानिक देव स्वर्गलोक में रहते हैं।

प्रश्न 8. वैमानिक देव किसे कहते हैं?

उत्तर - जो विमानों में होते हैं या रहते हैं उन्हें वैमानिक देव कहते हैं?

प्रश्न 9. वैमानिक देव कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर - वैमानिक देव 2 प्रकार के होते हैं - 1. कल्पोपपन्न, 2. कल्पातीत

प्रश्न 10. कल्पोपपन्न तथा कल्पातीत वैमानिक देव किसे कहते हैं?

उत्तर - जो कल्पों में उत्पन्न होते हैं वे कल्पोपपन्न कहलाते हैं जो कल्पों से परे (ऊपर) रहते हैं वे कल्पातीत कहलाते हैं।

प्रश्न 11. कल्प किसे कहते हैं?

उत्तर - जिसमें 10 प्रकार के इन्द्रादि की कल्पना की जाती है ऐसे 16 स्वर्गों को कल्प कहते हैं।

प्रश्न 12. दस प्रकार के इन्द्रादि कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर - **इन्द्र** - जो आज्ञा रूपी ऐश्वर्य को धारण करने वाला होता है वह इन्द्र है।

सामानिक - आयु आदि में इन्द्र के समान तथा आज्ञा ऐश्वर्य से रहित होते है।

त्रायस्त्रिंस - जो इन्द्र सभा में पिता-गुरु की तरह 33 की संख्या में होते हैं।

पारिषद - जो इन्द्र सभा में सदस्य देव, मित्र के समान होते हैं।

आत्मरक्ष - अंगरक्षक के समान देवों को आत्मरक्ष कहते हैं।

लोकपाल - कोतवाल के समान देवों को लोकपाल कहते हैं।

अनीक - पैदल आदि सात प्रकार की सेना में विभक्त देवों को अनीक कहते हैं।

प्रकीर्णक - नगर निवासी जनता के समान देवों को प्रकीर्णक कहते हैं।

अभियोग्य - हाथी, घोड़ा आदि बनाकर दासों के समान सवारी के काम आने वाले देवों को अभियोग्य कहते हैं।

किल्विष - चाण्डालादि की तरह दूर रहने वाले पापी देवों को किल्विष कहते हैं।

प्रश्न 13. कल्पोपपन्न देव कौन-कौन से हैं?

उत्तर - सोलह स्वर्गों के देव कल्पोपपन्न कहलाते हैं।

प्रश्न 14. सोलह स्वर्ग कौन-कौन से हैं तथा उनके इन्द्र आदि की अवगाहना, आयु कितनी होती है?

उत्तर-	**स्वर्ग**	**इन्द्र**	**अवगाहना**	**उत्कृष्ट आयु**	**जघन्य आयु**
1.	सौधर्म	1 सौधर्म	7 हाथ	2 सागर कुछ अधिक	1 पल्य कुछ अधिक
2.	ईशान	2 ईशान	7 हाथ	2 सागर "	1 पल्य "
3.	सानत्कुमार	3 सानत्कुमार	6 हाथ	7 सागर "	2 सागर "
4.	माहेन्द्र	4 माहेन्द्र	6 हाथ	7 सागर "	2 सागर "
5.	ब्रह्म	5 ब्रह्म	5 हाथ	10 सागर "	7 सागर "
6.	ब्रह्मोत्तर		5 हाथ	10 सागर "	7 सागर "
7.	लान्तव	6 लांतव	5 हाथ	14 सागर "	10 सागर "
8.	कापिष्ठ		5 हाथ	14 सागर "	10 सागर "
9.	शुक्र	7 शुक्र	4 हाथ	16 सागर "	14 सागर "
10.	महाशुक्र		4 हाथ	16 सागर "	14 सागर "
11.	शतार	8 शतार	4 हाथ	18 सागर "	16 सागर "
12.	सहस्रार		4 हाथ	18 सागर "	16 सागर "
13.	आनत	9 आनत	3½ हाथ	20 सागर	18 सागर
14.	प्राणत	10 प्राणत	3½ हाथ	20 सागर	18 सागर
15.	आरण	11 आरण	3 हाथ	22 सागर	20 सागर
16.	अच्युत	12 अच्युत	3 हाथ	22 सागर	20 सागर

प्रश्न 15. कल्पातीत देव कौन-कौनसे होते हैं? उनकी अवगाहना, आयु कितनी होती है?

उत्तर – सोलह स्वर्गों के ऊपर रहने वाले देव कल्पातीत कहलाते हैं।

	विमान	**अहमिन्द्र**	**शरीर अ०**	**उत्कृष्ट आयु**	**जघन्य आयु**
9 ग्रैवेयक	सुदर्शन	〃	2½ हाथ	23 सागर	22 सागर
	अमोघ	〃	2½ हाथ	24 सागर	23 सागर
	सुप्रबुद्ध	〃	2½ हाथ	25 सागर	24 सागर
	यशोधर	〃	2 हाथ	26 सागर	25 सागर
	सुभद्र	〃	2 हाथ	27 सागर	26 सागर
	सुविशाल	〃	2 हाथ	28 सागर	27 सागर
	सुमनस	〃	1½ हाथ	29 सागर	28 सागर
	सौमनस	〃	1½ हाथ	30 सागर	29 सागर
	प्रीतिंकर	〃	1½ हाथ	31 सागर	30 सागर
9 अनुदिश	आदित्य	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चि	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चिमाली	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	वैरोचन	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	प्रभास	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चिप्रभ	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चिमध्य	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चिरावर्त	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
	अर्चिविशिष्ट	〃	1½ हाथ	32 सागर	31 सागर
5 अनुत्तर	विजय	〃	1 हाथ	33 सागर	32 सागर
	वैजयन्त	〃	1 हाथ	33 सागर	32 सागर
	जयन्त	〃	1 हाथ	33 सागर	32 सागर
	अपराजित	〃	1 हाथ	33 सागर	32 सागर
	सर्वार्थसिद्धि	〃	1 हाथ	33 सागर	33 सागर

प्रश्न 16. देवों का जन्म व मृत्यु कैसे होती है?

उत्तर - देवों का जन्म यथा स्वर्ग विमान में स्थित उपपाद शय्या से होता है पर्याप्तियाँ पूर्ण होते ही वे 16 वर्ष के कुमारवत् युवा हो जाते हैं। मृत्यु के 6 माह पूर्व उनके शरीर की कांति फीकी पड़ जाती है, गले की माला सूखने लगती है, आयु के पूर्ण होते ही उनका शरीर कपूर की तरह उड़ जाता है।

प्रश्न 17. देवों का कौनसा शरीर होता है?

उत्तर - देवों का दिव्य अष्ठ ऋद्धियों युक्त, सप्त धातु-उपधातु से रहित वैक्रियिक शरीर होता है।

प्रश्न 18. देवों में आठ ऋद्धियाँ कौन-कौनसी होती है?

उत्तर - 1. **अणिमा** - मृणाल के एक छिद्र में चक्रवर्ती की विभूति रचने योग्य छोटा शरीर बना लेना।

2. **महिमा** - सुमेरू से भी बड़ा शरीर बना लेना।

3. **लघिमा** - वायु से भी हल्का शरीर बना लेना।

4. **गरिमा** - पहाड़ से भी भारी शरीर बना लेना।

5. **प्राप्ति** - भूमि पर बैठकर अंगुली से सूर्यादि को छू लेना।

6. **प्राकाम्य** - जल में भूमिवत् व भूमि में जलवत् क्रिया कर लेना।

7. **ईशित्व** - तीनों लोकों का स्वामीपना प्राप्त कर लेना।

8. **कामरूपित्व** - अदृश्य होना, अनेक रूप बनाना तथा पहाड़ में से भी गमनागमन कर लेना।

प्रश्न 19. वैमानिक देव कहाँ रहते हैं?

उत्तर - वैमानिक देव अपने-अपने स्वर्गों में स्थित इन्द्रक, श्रेणीबद्ध तथा प्रकीर्णक विमानों में रहते हैं।

प्रश्न 20. देव स्वर्गों में क्या करते हैं?

उत्तर - स्वर्गों में सम्यग्दृष्टि देव अकृत्रिम चैत्यालयों की अर्चना, तत्वचर्चा, धर्मरक्षा, तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि श्रवण आदि शुभ कार्य करते हैं। जबकि मिथ्यादृष्टि देव विषयभोगों, रागरंग, द्वीप समुद्रों में क्रीड़ा आदि में अपना सारा समय गंवा देते हैं।

प्रश्न 21. वैमानिक देव च्युत होकर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - देवगति के देव च्युत होकर मनुष्य और तिर्यंच होते हैं। मिथ्यादृष्टि देव एकेन्द्रिय भी होते हैं।

प्रश्न 22. वैमानिक देवों में कौन से जीव उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य और तिर्यंच ही वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 23. देवियाँ कितने स्वर्गों तक होती है तथा उनके उपपादस्थान कहाँ होते हैं?

उत्तर - अच्युत नामक सोलहवें स्वर्ग तक देवियाँ होती है। उनके उपपाद स्थान सौधर्म-ऐशान स्वर्ग में ही होते है उनके नियोगी देव उन्हें यथास्थान ले जाते हैं।

प्रश्न 24. किन-किन देवों की देवियाँ नहीं होती है?

उत्तर - ब्रह्मनामक पाँचवें स्वर्ग में रहने वाले लौकान्तिक देवों की, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश, 5 अनुत्तर विमानों में रहने वाले अहमिन्द्र देवों की देवियाँ नहीं होती है।

प्रश्न 25. देवों का कौनसा आहार व श्वासोच्छ्वास कितने समय में होता है?

उत्तर - देवों का अमृतमयी मानसिक आहार होता है जितने सागर की आयु होती है उतने ही हजार वर्ष बाद उनका आहार होता है तथा उतने ही पक्ष के बाद श्वासोच्छ्वास होता है।

प्रश्न 26. क्या शुभकार्य करने वाले वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - सराग संयमी, संयमासंयमी, तपधारी, मंदकषायी, धर्मश्रवण आचरण करने वाले, धर्म-आयतनों की रक्षा-सेवा करने वाले, पात्रदान, शुभलेश्या, कषायनिग्रह, मरणकाल में धर्मध्यान रूप परिणति तथा सम्यग्दर्शन आदि शुभ चर्या वाले जीव वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हैं।

प्रश्नावली

1. **ऊर्ध्वलोक किसे कहते हैं तथा इसका आकार कैसा होता है?**
2. **कल्प किसे कहते हैं तथा इसके कितने भेद होते हैं?**
3. **देवों का कौनसा शरीर होता है? ऋद्धियों के लक्षण लिखें।**
4. **स्वर्गों में देवियाँ कहाँ होती है? कहाँ नहीं होती है?**
5. **स्वर्गों में कितने इन्द्र तथा अहमिन्द्र होते हैं?**

✪✪✪✪✪

पाठ-3

मध्यलोक

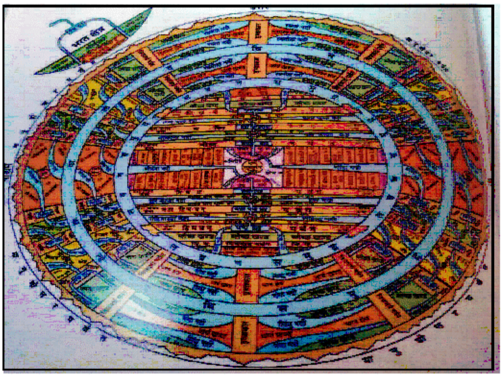

प्रश्न 1. मध्यलोक किसे कहते हैं?

उत्तर - लोक के मध्य 1 राजू प्रमाण चौड़े हिस्से को, मध्यलोक कहते हैं। इसका आकार झल्लरी (खंजरी वाद्ययंत्र) के समान है।

प्रश्न 2. मध्यलोक में क्या-क्या होता है?

उत्तर - मध्यलोक में एक-दूसरे को चारों ओर से घेरे हुए असंख्यात द्वीप व समुद्र हैं। ये द्वीप-समुद्र तिर्यक् आकार में फैले हैं। इसलिए इसे तिर्यक् लोक भी कहते हैं।

प्रश्न 3. मध्यलोक में कौन निवास करते हैं?

उत्तर - मध्यलोक में मुख्यत: तिर्यंच और मनुष्य रहते हैं पर कहीं-कहीं (भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी) देव भी निवास करते हैं।

प्रश्न 4. मध्यलोक में स्थित द्वीप-समुद्रों के नाम बताइये?

उत्तर - जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, धातकीखण्ड, कालोदधि समुद्र, पुष्कर द्वीप, पुष्कर समुद्र, वारुणीद्वीप, वारुणीवर समुद्र, क्षीरवर द्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवर द्वीप, घृतवर समुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वरद्वीप, नन्दीश्वर समुद्र तथा इस प्रकार असंख्यात द्वीप समुद्रों के बाद अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप तथा स्वयंभूरमण समुद्र है।

प्रश्न 5. द्वीप-समुद्रों की रचना कैसी है?

उत्तर - सभी द्वीप-समुद्र गोल चूड़ी की तरह एक-दूसरे को घेरे हुये हैं अर्थात् जम्बू द्वीप को लवणसमुद्र तथा लवण समुद्र को धातकीखण्ड आदि इसी प्रकार असंख्यात द्वीप-समुद्र परस्पर एक दूसरे को घेरे हुये है।

प्रश्न 6. तो क्या इनका विस्तार एक जैसा होता है?

उत्तर - नहीं, एक जैसा नहीं अपितु उत्तरोत्तर दूना-दूना बढ़ता जाता है।

प्रश्न 7. क्या इन द्वीपों की रचना एक जैसी है या अंतर है?

उत्तर - हाँ, द्वीपों की रचना एक जैसी है, पर वह भी दूनी-दूनी बढ़ती गई है जैसे जम्बूद्वीप में 6 कुलाचल है तो धातकीखण्ड में 12 होंगे।

प्रश्न 8. इस प्रकार की दूनी-2 रचना कहाँ तक होती है?

उतर - मनुष्यलोक तक।

प्रश्न 9. मनुष्यलोक किसे कहते हैं?

उत्तर - जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड तथा आधा पुष्करवरद्वीप लवणसमुद्र एवं कालोदधि समुद्र इन्हें मनुष्यलोक कहते हैं। (इसे अढाईद्वीप भी कहते हैं। इसका विस्तार 45 लाख योजन है।

प्रश्न 10. जम्बूद्वीप कहाँ है तथा इसका आकार विस्तार कितना है?

उत्तर - मध्यलोक में स्थित सभी द्वीप-समुद्रों के मध्य थाली की तरह गोलाकार तथा 1 लाख योजन विस्तार वाला जम्बूद्वीप है।

प्रश्न 11. इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप क्यों हैं?

उत्तर - क्योंकि इस द्वीप के मध्य एक पृथ्वीकायिक जम्बू (जामुन) का वृक्ष स्थित हैं जो अकृत्रिम है।

प्रश्न 12. जम्बूद्वीप में क्या-क्या रचनाएँ होती हैं?

उत्तर -
1. जम्बूद्वीप में भरत, हेमवत, हरि, विदेह, रम्यक्, हैरण्यवत और ऐरावत ये 7 क्षेत्र हैं।
2. हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मि और शिखरिन् ये 6 पर्वत हैं।
3. पर्वतों पर क्रमशः पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केशरी, पुण्डरीक और महापुण्डरीक ये 6 विशाल तालाब हैं।
4. 6 तालाबों में क्रमश 1-1 पृथ्वीकायिक कमलों की रचना है।

5. इन कमलों पर क्रमश श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी देवियाँ अपने परिवार देवो के साथ रहती है।
6. पर्वतों से गंगा-सिंधु, रोहित-रोहितास्या, हरित्-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता और रक्तोदा ये 14 नदियाँ निकली है।
7. द्वीप के बीचों-बीच नाभि की तरह 1 लाख योजन वाला सुमेरु पर्वत है।
8. सुमेरू पर्वत में चार भद्रशाल, नंदन, सौमनस और पाण्डुक वन हैं।
9. चारों वनों की चारों दिशाओं में एक-एक अकृत्रिम जिन चैत्यालय है।
10. एक-एक जिन चैत्यालय में 108-108, 500 धनुष ऊँची पद्मासन रत्नमयी अरहंत भगवान की प्रतिमाएँ हैं।

प्रश्न 12. भरत क्षेत्र कहाँ है?

उत्तर - जम्बूद्वीप के दक्षिण भाग में भरत क्षेत्र है। भरत क्षेत्र के उत्तर में हिमवन पर्वत है तथा पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण तीनों ओर से लवणसमुद्र से घिरा हुआ है। इसके मध्य में विजयार्ध पर्वत है। हिमवन पर्वत से गंगा-सिन्धु निकली है जो विजयार्ध पर्वत से होती हुई दक्षिण लवण समुद्र में मिली है जिससे भरत क्षेत्र के 6 खण्ड (भाग) हो जाते हैं। जिसे हम षट्खण्ड कहते हैं।

प्रश्न 13. भारतवर्ष का नाम भारत क्यों पड़ा?

उत्तर - प्रथमतीर्थेश श्री ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम भारत वर्ष या भारत पड़ा।

प्रश्न 14. षट् खण्ड कौन-कौन से हैं?

उत्तर - एक आर्यखण्ड तथा पाँच म्लेच्छखण्ड ये षट्खण्ड हैं। जिसके अधिपति चक्रवर्ती होते हैं।

प्रश्न 15. आर्यखण्ड कहाँ हैं?

उत्तर - विजयार्ध पर्वत के दक्षिण में तीन खण्डों के मध्य का खण्ड आर्यखण्ड है तथा शेष ऊपर तीन तथा नीचे के दो, पाँच म्लेच्छखण्ड हैं। आर्यखण्ड में ही धर्म साधना व निर्वाण (मोक्ष) होता है।

प्रश्न 16. आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर - जिनका रहन-सहन संस्कार अच्छे होते हैं तथा जिनकी गुणवान लोग सेवा करते हैं वे आर्य कहलाते हैं। इनके 2 भेद हैं - 1. भोगभूमिज, 2. कर्मभूमिज।

प्रश्न 17. भोगभूमिज आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर - भोगभूमि में उत्पन्न होने वाले मनुष्य, भोगभूमिज आर्य कहलाते हैं।

प्रश्न 18. कर्मभूमिज आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर - कर्मभूमि में उत्पन्न होने वाले आर्य मनुष्य, कर्मभूमिज आर्य कहलाते हैं।

प्रश्न 19. म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर - जो आचार-विचार और धर्म से रहित होते हैं वे म्लेच्छ कहलाते हैं। इनके 2 भेद हैं। 1. कर्मभूमिज म्लेच्छ, 2. अंतर्द्वीपज म्लेच्छ

प्रश्न 20. कर्मभूमिज म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर - कर्मभूमि में उत्पन्न होने वाले म्लेच्छ मनुष्य कर्मभूमिज म्लेच्छ कहलाते हैं। जैसे-यवन।

प्रश्न 21. अंतर्द्वीपज म्लेच्छ किसे कहते हैं?

उत्तर - 96 अंतर्द्वीपों में उत्पन्न होने वाले म्लेच्छ मनुष्य अंतर्द्वीपज म्लेच्छ कहलाते हैं। इन्हें कुभोगभूमिज म्लेच्छ भी कहते हैं।

प्रश्न 22. कुभोगभूमि किसे कहते हैं?

उत्तर - जहाँ पर एक पैर, एक सींग एवं पूँछ आदि विचित्र मुख आकृति वाले मनुष्य, तिर्यंच रहते हैं उसे कुभोगभूमि कहते हैं। ये लवणसमुद्र एवं कालोदधि समुद्र संबंधी कुल 96 होती है। यहाँ के लोग कंदमूल, मिट्टी खाते हैं तथा गुफाओं एवं वृक्षों के नीचे पशुओं की तरह रहते हैं। श्यामवर्णी होते हैं।

प्रश्न 23. मध्यलोक में मनुष्यलोक का विभाजन कैसे होता है?

उत्तर - मानुषोत्तर पर्वत के द्वारा मनुष्यलोक का विभाजन होता है। क्योंकि इसके आगे मनुष्य का गमनागमन नहीं हो सकता है।

प्रश्नावली

1. **मध्यलोक किसे कहते हैं तथा इसका विस्तार कितना है?**
2. **मध्यलोक में कितने द्वीप-समुद्र है तथा उनकी रचना कैसी है?**
3. **जम्बूद्वीप में क्या-क्या रचनाएँ होती है?**
4. **भरत क्षेत्र कहाँ है इसका नाम भरत क्षेत्र क्यों पड़ा?**
5. **आर्य व म्लेच्छ में अंतर बताऐं।**
6. **आप कहाँ रहते है?**

✪✪✪✪✪

पाठ-4

अधोलोक

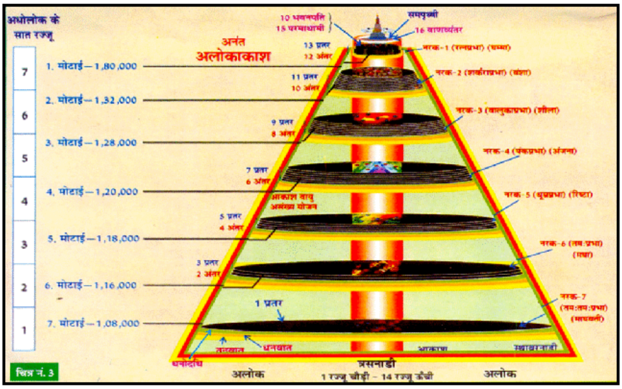

चित्र नं. 3

प्रश्न 1. अधोलोक किसे कहते हैं?

उत्तर - लोक के नीचे का 7 राजू लम्बा, 7 राजू मोटा व नीचे 7 राजू व ऊपर 1 राजू चौड़ा जो हिस्सा है वह अधोलोक कहलाता है। इसका आकार वेत्रासन (तिपाही) के समान होता है।

प्रश्न 2. अधोलोक में क्या-क्या होता है?

उत्तर - अधोलोक में भवनवासी-व्यंतरवासी देवों के भवन, फिर 7 नरक भूमियाँ हैं जिनमें नारकी जीव असहनीय दुखों को न चाहते हुए भी भोगते हैं। सबसे नीचे 1 राजू प्रमाण कलकल भूमि है।

प्रश्न 3. कलकल भूमि किसे कहते हैं?

उत्तर - जहाँ निगोदिया जीव ही रहते हैं, अन्य जीव नहीं रहते है उसे कलकल भूमि कहते हैं।

प्रश्न 4. सात नरक तथा सात भूमियाँ कौन-कौनसी है?

उत्तर -
1. धम्मानरक की रत्नप्रभा भूमि।
2. वंशानरक की शर्कराप्रभा भूमि।
3. मेघानरक की बालुकाप्रभा भूमि।
4. अंजनानरक की पंकप्रभा भूमि।
5. अरिष्ठानरक की धूमप्रभा भूमि।
6. मघवानरक की तमप्रभा भूमि।
7. माघवीनरक की महातमप्रभा भूमि।

प्रश्न 5. नरकों में नारकी जीव क्या करते हैं?

उत्तर - नरकों में नारकी जीव आपस में लड़ते-झगड़ते हैं तथा क्षेत्रजनित, पारस्परिक, मानसिक, शारीरिक तथा असुरकृत दुखों को निरंतर भोगते रहते हैं। उनको क्षणमात्र भी सुख नहीं होता है।

प्रश्न 6. नारकी सम्यग्दृष्टि होते हैं या मिथ्यादृष्टि?

उत्तर - नरकों में सम्यग्दृष्टि व मिथ्यादृष्टि दोनों होते हैं। प्रथम नरक तक जीव सम्यग्दर्शन से सहित जन्म ले सकता है शेष नरकों में नहीं। पर हाँ, वे वहाँ जातिस्मरण, वेदना अनुभव, धर्मश्रवण आदि कारणों से सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 7. अधोलोक में कितने अकृत्रिम जिनचैत्यालय होते हैं?

उत्तर - अधोलोक में भवनवासी देवों के भवनों में 7 करोड़ 72 लाख अकृत्रिम जिन चैत्यालय होते हैं।

प्रश्न 8. नरक किसे कहते हैं?

उत्तर - जो नरों (जीवों)को शीत ऊष्ण आदि वेदनाओं से शब्दाकुलित कर दे अथवा पापी जीवों को आत्यन्तिक दुखों को प्राप्त कराये नरक है।

प्रश्न 9. नारकी किसे कहते हैं?

उत्तर - तत्स्थानवर्ती द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में जो जीव रमते नहीं तथा परस्पर में भी जो कभी भी प्रीति को प्राप्त नहीं होते हैं वे नारकी कहलाते हैं।

प्रश्न 10. नारकी कहाँ रहते हैं?

उत्तर - नारकियों के रहने के स्थान को बिल कहते हैं।

प्रश्न 11. बिल कैसे होते हैं?

उत्तर - वज्र के सदृश भीत से युक्त और गोल, तिकोन, चौकोर आदि विविध आकार वाले वे अत्यंत अंधकारयुक्त बिल सब इन्द्रियों को दुखदायक हैं।

प्रश्न 12. बिल कितने प्रकार के व कितने होते हैं?

उत्तर - बिल 3 प्रकार के होते हैं। इन्द्रक, श्रेणीबद्ध, प्रकीर्णक। प्रथम नरक में 30 लाख, दूसरे में 25 लाख, तीसरे में 15 लाख, चौथे में 10 लाख, पांचवे में 3 लाख, छठवें में 5 कम 1 लाख, सातवें में 5 बिल इस प्रकार कुल 84 लाख बिल होते हैं।

प्रश्न 13. बिल कितने बड़े होते हैं या विस्तार कितना होता है?

उत्तर – इन्द्रक बिल – संख्यात योजन विस्तार।

श्रेणीबद्ध – असंख्यात योजन।

प्रकीर्णक – कुछ संख्यात, कुछ असंख्यात।

प्रश्न 14. इन बिलों में कितने नारकी रहते हैं?

उत्तर – संख्यात योजन वाले नरकों में नियम से संख्यात नारकी व असंख्यात योजन विस्तार वाले में असंख्यात, नारकी रहते है।

प्रश्न 15. नरक में दुर्गन्धि कैसी होती है?

उत्तर – नरकों में बकरी, हाथी, भैंस, घोड़ा, गधा, ऊँट, बिल्ली, सर्प, मनुष्य आदि के सड़े हुये शरीर की गंध की अपेक्षा के नारकियों के बिल अनन्त गुणी दुर्गन्ध से युक्त होते हैं।

प्रश्न 16. नारकी कैसे होते हैं?

उत्तर – ये विकलांग, हुण्डक संस्थानी, नपुंसक, दुर्गन्धित, दुर्वर्ण, दुस्वर, दुःस्पर्श, दुर्भग, कृष्ण और रूक्ष होते हैं, इनके शरीर में कड़वी तुम्बी और कांजीर के समान रस उत्पन्न होता है। एक नारकी एक समय में एक ही आकार बना सकता है। वह आकार भी विकृत, घृणा का स्थान और कुरुप ही बना सकता है।

प्रश्न 17. नारकियों की लेश्या कैसी होती है?

उत्तर – तिर्यञ्चों में जो अशुभ लेश्या है उससे अत्यधिक अशुभ कृष्ण, नील, कापोत लेश्या नारकियों में है नीचे-नीचे के नरकों में अशुभ लेश्या की प्रकर्षता से अधिक-अधिक संक्लेश भाव होते हैं।

प्रश्न 18. नारकियों के परिणाम कैसे होते हैं?

उत्तर – अशुभतर परिणाम से यहाँ स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्द लिये गये हैं ये क्षेत्र विशेष के निमित्त से अत्यन्त दुःख के कारण अशुभतर है।

प्रश्न 19. नरकों का स्पर्श कैसा होता है?

उत्तर – एक साथ हजारों बिच्छुओं को काटने पर जो वेदना होती है। उससे भी अधिक वेदना वज्रमय कांटों से व्याप्त नरक भूमि के स्पर्श मात्र से होती है।

प्रश्न 20. क्या नारकियों के शरीर में मांसादि होता है?

उत्तर – नारकियों का वैक्रियिक शरीर होता है लेकिन वे अपनी अशुभ विक्रिया से उसमें भी मल, रुधिर, मांस, पीव, अस्थि, चर्म आदि अतीव अशुभ सामग्री युक्त बना लेते हैं।

प्रश्न 21. नारकियों का शरीर कैसा होता है?

उत्तर – नारकियों के शरीर अशुभ नामकर्म के उदय से अशुभ अंगोपांग, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, स्वर वाले, वीभत्स तथा निर्लून अण्डज की आकृति वाले होते हैं।

प्रश्न 22. नारकी नरक में क्या खाते-पीते हैं?

उत्तर – नरकों में बकरी, हाथी, भैंस, घोड़ा, गधा, ऊँट, बिल्ली और मेढ़े आदि के सड़े हुए शरीर की गंध से अनन्तगुणी दुर्गन्ध वाली थोड़ी मिट्टी को नारकी खाते हैं। प्रथम नरक की वह मिट्टी की गंध से यहाँ के एक कोस के भीतर के जीव मर सकते हैं। शेष नरक में इसकी घातक शक्ति आधा-आधा कोस बढ़ती जाती है। अत्यन्त तीक्ष्ण खारा व गरम वैतरणी नदी का जल पीते हैं।

प्रश्न 23. नरकों में कितने प्रकार के दुःख होते हैं?

उत्तर – 4 प्रकार के – 1. क्षेत्र जनित, 2. शारीरिक दुःख 3. मानसिक दुःख, 4. असुर कृत दुःख

प्रश्न 24. क्या नारकियों को रोग भी होते हैं?

उत्तर – हाँ, दुःसह और निष्प्रतिकार जितने भी रोग इस संसार में है वे सब के सब रोग नारकियों के शरीर में रोम-रोम में पाये जाते हैं। वे सम्पूर्ण रोग स्वभाव से ही नारकियों के शरीर में एक साथ उदित होते हैं।

प्रश्न 25. नारकियों में कौन-कौन से वेद होते हैं?

उत्तर - नारकियों को एक मात्र नपुसंक वेद ही होता है।

प्रश्न 26. नरकों में सम्यक्त्व उत्पत्ति के क्या-क्या कारण है?

उत्तर - पहली से तीसरी पृथ्वी तक - धर्मश्रवण, जाति स्मरण, वेदना
चौथी से सातवीं पृथ्वी तक - जातिस्मरण, वेदना

प्रश्न 27. कौन से संहनन वाले जीव किस नरक में जाते है?

उत्तर - असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन वाले 1 से 3 नरक में, कीलित संहनन वाले 1-5 में व अर्द्धनाराच, नाराच, वज्र नाराच संहनन वाले 1-6 में तथा वज्रवृषभ नाराच संहनन वाले 1 से 7 वें नरक में जाते हैं।

प्रश्न 28. मरण के बाद नारकियों के शरीर का क्या होता है?

उत्तर - आयु पूर्ण होने पर शरीर कपूर की भांति उड़ जाता है।

प्रश्न 29. नरकों में तलवारादि अस्त्र, वन, नदी, सिंहादि प्राणी, नदी, सेमर वृक्ष, आदि होते हैं क्या?

उत्तर - नहीं, नरकों में ये सब नहीं होते। नारकी एकत्व विक्रिया से एक-दूसरे को सताने के लिए स्वयं बनते हैं।

प्रश्न 30. नारकी वहाँ से भाग नहीं सकते हैं?

उत्तर - नहीं, नरकों में जिस जीव की जितनी आयु है उसे उतने समय वहाँ रहना ही पड़ता है। इनका अकालमरण नहीं होता है।

प्रश्न 31. कौन से जीव नरकों में उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - 1. अत्यधिक आरंभ-परिग्रह में मूर्च्छा करने वाले।

2. रौद्रध्यानी (हिंसादि पाप करके उसमें भी आनंद मानने वाले)।

3. निर्माल्य सेवन करने वाले।

4. देव-शास्त्र-गुरुओं का पराभव (निंदा) करने वाले।

5. अत्यधिक तीव्र, कृष्ण, नील, कापोत लेश्या के लक्षण वाले आदि।

नरक-परिचय

नरक	पटल	शीत ऊष्ण विभाग	गुण स्थान	आयु उत्कृष्ट	जघन्य आयु	अवगाहना उत्कृष्ट	कौनसा जीव कहाँ जन्म	नरक से निकल कर क्या बन सकता है	कितनी बार जन्म	विक्रिया
1. रत्नप्रभा	13	अत्यन्त ऊष्ण	1-4	1 सागर	10 हजार वर्ष	7 धनुष, 3 हाथ 6 अंगुल	असंज्ञी पंचेद्रिय त्रिर्यंच (1)	1 तीर्थंकर, मोक्ष	8	शस्त्रादि
2. शर्करा	11	अत्यन्त ऊष्ण	1-4	3 सागर	1 सागर	15 धनुष, 2 हाथ	सरीसृप (1-2)	2 तीर्थंकर, मोक्ष	7	शस्त्रादि
3. बालुका	9	अत्यन्त ऊष्ण	1-4	7 सागर	3 सागर	31 धनुष, 1 हाथ	पक्षी (1-3)	3 तीर्थंकर, मोक्ष	6	शस्त्रादि
4. पंक प्रभा	7	अत्यन्त ऊष्ण	1-4	10 सागर	7 सागर	62 धनुष, 2 हाथ	भुंजगादि (1-4)	4 मोक्ष (केवली)	5	शस्त्रादि
5. धूमप्रभा	5	ऊपर उष्ण	1-4	17 सागर	10 सागर	125 धनुष	सिंहादि (1-5)	5 मुनि	4	शस्त्रादि
6. तम प्रभा	3	उत्कृष्ट शीत	1-4	22 सागर	17 सागर	250 धनुष	स्त्री (1-6)	6 सम्यग्दृष्टि	3	शस्त्रादि
7. महातमप्रभा	1	उत्कृष्ट शीत	1-4	33 सागर	22 सागर	500 धनुष	मनुष्य व मस्त्य (1-7)	7 तिर्यंच	2	सिंहादि

प्रश्नावली

1. अधोलोक किसे कहते हैं? आकार-विस्तार लिखें?
2. अधोलोक में कौन-कौन रहते हैं?
3. 7 भूमि तथा 7 नरकों के नाम लिखो?
4. नारकियों के शरीर, आहार, दुःख, लेश्या, संहनन का वर्णन करें?
5. नरक परिचय चार्ट याद करें?

पाठ-5

काल

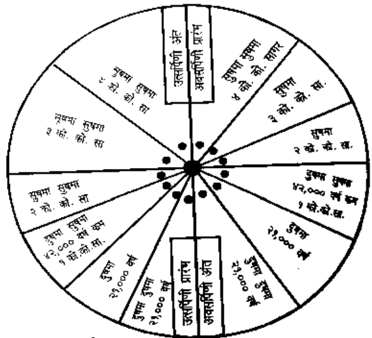

प्रश्न 1. काल किसे कहते हैं?

उत्तर – जो द्रव्यों के परिवर्तन में सहायक होता है उसे काल कहते हैं। जैसे घड़ी, घण्टा, मिनिट आदि।

प्रश्न 2. काल के कितने भेद है?

उत्तर – काल के मुख्य 2 भेद है – 1. उत्सर्पिणी काल, 2. अवसर्पिणी काल।

प्रश्न 3. उत्सर्पिणी काल किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस काल में जीवों की आयु, सुख, अनुभव, शरीर, ऊँचाई आदि में वृद्धि होती है उसे उत्सर्पिणी काल कहते हैं।

प्रश्न 4. अवसर्पिणी काल किसे कहते हैं?

उत्तर – जिस काल में जीवों की आयु, सुख, अनुभव, शरीर, ऊँचाई आदि में ह्रास (हीनता) होती है उसे अवसर्पिणी काल कहते हैं।

प्रश्न 5. उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी काल के कितने भेद हैं?

उत्तर –

उत्सर्पिणी काल	अवसर्पिणी काल
1. दुखमा-दुखमा	1. सुखमा-सुखमा
2. दुखमा	2. सुखमा
3. दुखमा-सुखमा	3. सुखमा-दुखमा
4. सुखमा-दुखमा	4. दुखमा-सुखमा
5. सुखमा	5. दुखमा
6. सुखमा-सुखमा	6. दुखमा-दुखमा

प्रश्न 6. कालचक्र क्या है?

उत्तर - अवसर्पिणी काल के आरम्भ में लेकर उत्सर्पिणी की समाप्ति तक काल का एक चक्र पूर्ण हो जाता है। यही कालचक्र है। इसे ही कल्पकाल भी कहते हैं।

प्रश्न 7. सुखमा-सुखमा काल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिस काल में ऐहिक इन्द्रियक सुख ही सुख होता है, जो भोग प्रधान काल है वह सुखमा-सुखमा काल है इसे उत्तमभोग भूमि भी कहते हैं यह देवकुरु-उत्तरकुरु नामक शाश्वत भोगभूमि की तरह है। इसका समय 4 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है।

प्रश्न 8. सुखमा काल किसे कहते है?

उत्तर - जिस काल में भोग प्रधान लौकिक सुख होता है वह सुखमा काल है इसे मध्यम भोगभूमि भी कहते है यह हरि और रम्यक क्षेत्र की शाश्वत मध्यम भोगभूमि की तरह है। इसका समय 3 कोडाकोडी सागर प्रमाण होता है।

प्रश्न 9. सुखमा-दुखमा काल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिस काल में लौकिक सुख अधिक तथा दु:ख कम होता है। वह सुखमा-दुखमा काल है इसे जघन्य भोगभूमि काल भी कहते हैं। यह काल हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र की शाश्वत जघन्य भोगभूमि की तरह होता है। इसका समय 2 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है।

प्रश्न 10. दुखमा-सुखमा काल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिस काल में दुख अधिक तथा लौकिक सुख कम होता है या जिससे कर्मभूमि का प्रारंभ होता है वह दुखमा-सुखमा काल है। यह विदेह क्षेत्र के देवकुरु व उत्तरकुरु को छोड़कर शेष क्षेत्र में प्रचलित काल की तरह है। इस काल का समय 42 हजार कम एक कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है। इसी काल में तीर्थंकर जन्म लेकर धर्म का प्रवर्तन करते हैं।

प्रश्न 11. दुखमा काल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिस काल में धर्म निरंतर हीन होता जाने से दुख बढ़ता जाता है वह दुखमा काल है। यह काल अभी वर्तमान में चल रहा है। इस काल का समय 21000 वर्ष प्रमाण होता है। काल के अंत में चतुर्विध संघ, धर्म, अग्नि पूर्णत: नष्ट हो जाती है।

प्रश्न 12. दुखमा-दुखमा काल किसे कहते हैं?

उत्तर - जिस काल में धर्म न होने से दुख ही दुख अधिक मात्रा में होता है वह दुखमा-दुखमा काल है (जो अभी चल रहे काल के बाद आयेगा)। इसका काल भी 21000 वर्ष प्रमाण है।

प्रश्न 13. अवसिर्पणी काल बीतने के पूर्व क्या होता है?

उत्तर - अवसर्पिणी काल बीतने के 49 दिन पूर्व से प्रलयकाल आता है। जिसमें क्रमशः 7-7 दिन तक 7 प्रकार कुवृष्टियाँ होती है। क्रमशः सरस, विरस, तीक्ष्ण, रुक्ष, उष्ण, विष और क्षार के मेघ बरसते हैं जिससे सारी पृथ्वी नष्ट होने लगती है। मात्र देव 72 युगलों के साथ अन्य मनुष्यों तथा तिर्यंचों को विजयार्ध पर्वत की गुफाओं में ले जाकर सुरक्षित रखते हैं वे ही शेष रहते हैं बाकी सब नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार अवसर्पिणी काल समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 14. उत्सर्पिणी काल का प्रारंभ कैसे होता है?

उत्तर - पुनः 49 दिन तक क्रमशः जलमेघ, क्षीरमेघ, अमृतमेघ, घृतमेघ, रसमेघ आदि 7 प्रकार की सुवृष्टियाँ 7-7 दिन तक होती है। जिससे तब तक भूमि शीतल और उर्वरा हो, लता आदि वनस्पतियों से युक्त सुंदर-सुस्वादु हो जाती है। तभी विजयार्द्ध पर्वत की गुफा में सुरक्षित जीव बाहर निकलकर सुस्वादु मिट्टी, फल आदि खाकर पशुओं की तरह विचरण करते हैं। यहीं से उत्सर्पिणी काल का प्रारंभ होता है। उत्सर्पिणी काल के प्रथम काल को दुखमा-दुखमा काल भी कहते हैं। यह काल यद्यपि अवसर्पिणी के छठे काल की तरह होता है फिर भी इनमें जीवों की आयु, बल, अनुभव, सुख में वृद्धि होती जाती है इसका समय 21000 वर्ष होता है। फिर दुखमा काल आता है जिसकी अवधि 21000 वर्ष है। आयु, बल शरीर ऊँचाई बढ़ती जाती है। अंत में 1000 वर्ष शेष रहने पर 14 कुलकरों का जन्म होता है। जो नैतिक उपदेश देते हैं।

इसके पश्चात् दुखमा-सुखमा नामक काल आता है जो 42000 वर्ष कम 1

कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है। आरंभ में आयु 120 वर्ष तथा शरीर की ऊँचाई 7 हाथ होती है जो बढ़ते-बढ़ते 500 धनुष हो जाती है इस काल में तीर्थंकरों की उत्पत्ति होती है। पश्चात् सुखमा-दुखमा, सुखमा तथा सुखमा-सुखमा नामक भोग भूमि काल का प्रारंभ होता है जिसकी सारी व्यवस्था क्रमशः जघन्यभोगभूमि, मध्यमभोगभूमि एवं उत्तम भोगभूमि की तरह होती है। इस प्रकार उत्सर्पिणी काल समाप्त हो जाने पर कालचक्र (कल्पकाल) पूर्ण होता है और दूसरा प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 15. एक कालचक्र कितने समय का होता है?

उत्तर - 20 कोड़ाकोड़ी सागर का एक कालचक्र होता है जिसमें 10 कोड़ाकोड़ी सागर अवसर्पिणी के तथा 10 कोड़ाकोड़ी सागर उत्सर्पिणी काल के होते हैं।

प्रश्न 16. काल परिवर्तन कहाँ होता है तथा कहाँ नहीं?

उत्तर - काल परिवर्तन भरत-ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्डों में होता है तथा 5 विदेह क्षेत्रों में, 5 म्लेच्छखण्डों में, विजयार्द्धपर्वत पर, भोगभूमियों-कुभोगभूमियों में नहीं होता।

प्रश्न 17. वर्तमान में कौनसा काल चल रहा है?

उत्तर - वर्तमान में हुण्डा अवसर्पिणी काल चल रहा है जो असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल बीतने पर आता है। इस काल में अनहोनी घटनायें घटती है जैसे- 1. चक्रवर्ती का मानभंग, 2. तीर्थंकरों का तीसरे काल में जन्म व मोक्ष, 3. तीर्थंकरों की पुत्रियों का जन्म, 4. तीर्थंकरों पर उपसर्ग, 5. 11 रूद्रों, 6. अनेक पदधारी तीर्थंकर, 7. अयोध्या तथा सम्मेदाचल के अलावा अन्य स्थानों पर तीर्थंकरों का जन्म व मोक्ष आदि।

प्रश्नावली

1. काल की परिभाषा तथा भेद लिखें?

2. अवसर्पिणी काल के अंत में क्या-क्या होता है?

3. उत्सर्पिणी काल के प्रारम्भ में क्या-क्या होता है?

4. काल परिवर्तन कहाँ होता है कहाँ नहीं?

5. वर्तमानकाल (अभी चल रहे) की विशेषताएँ लिखें?

✪✪✪✪✪

पाठ-6

भोगभूमि

प्रश्न 1. भोगभूमि किसे कहते हैं?

उत्तर - जहाँ प्राणी दस प्रकार के कल्पवृक्षों द्वारा अपने जीवन को व्यतीत करते हैं उसे भोगभूमि कहते हैं।

प्रश्न 2. कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर - जो वृक्ष अपने-अपने मन की इच्छित वस्तुओं को (माँगने पर) प्रदान करते हैं उन्हें कल्पवृक्ष कहते हैं। ये दस प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 3. दस भेद कल्पवृक्ष के कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - 1. पानांग, 2. तुर्यांग, 3. भूषणांग, 4. वस्त्रांग, 5. भोजनांग, 6. गृहांग, 7. दीप्तयांग, 8. भाजनांग, 9. माल्यांग, 10. ज्योतिरांग।

प्रश्न 4. पानांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर - जो भोगभूमि के प्राणियों को पीने योग्य मधु, सुस्वादु, प्रशस्त, अतिशीतल, 32 प्रकार की पेय सामग्री प्रदान करते हैं, जैसे-शरबत आदि। उन्हें पानांग कल्पवृक्ष कहते हैं।

प्रश्न 5. तुर्यांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर - जो मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र प्रदान करते हैं उन्हें तुर्यांग कल्पवृक्ष कहते हैं। जैसे-वीणा, सितार आदि।

प्रश्न 6. भूषणांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो श्रृंगार के लिए अनेक प्रकार के आभूषणों को प्रदान करते हैं वे भूषणांग कल्पवृक्ष कहलाते हैं। जैसे–मुकुट, हार आदि।

प्रश्न 7. वस्त्रांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो चीनपट (रेशमी) आदि पहनने के वस्त्रों को प्रदान करते हैं वे वस्त्रांग कल्पवृक्ष कहलाते हैं। जैसे–साड़ी, धोती–दुपट्टा आदि।

प्रश्न 8. भोजनांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो स्वादिष्ट 16 प्रकार के आहार, 17 प्रकार के व्यंजन, 14 प्रकार के सूप, 108 प्रकार के खाद्य पदार्थ, 363 प्रकार के स्वाद, 63 प्रकार के रस आदि पकवानों को प्रदान करते हैं उन्हें भोजनांग कल्पवृक्ष कहते हैं। जैसे–रोटी–दाल, मिठाई आदि।

प्रश्न 9. गृहांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो प्राणियों के रहने के लिए स्वस्तिक तथा नंद्यावर्त आदि 16 प्रकार के दिव्य सुंदर गृहादि प्रदान करते हैं वे गृहांग कल्पवृक्ष कहलाते हैं। जैसे–भवन, मकान आदि।

प्रश्न 10. दीप्तयांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कल्पवृक्ष चन्द्रमा की तरह शीतल दीपकों के समान प्रकाश प्रदान करते हैं वे दीप्तयांग कल्पवृक्ष कहलाते हैं।

प्रश्न 11. भाजनांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कल्पवृक्ष भोजनादि रखने के बर्तन आदि प्रदान करते हैं वे भाजनांग कल्पवृक्ष है। जैसे–कलश, थाली आदि।

प्रश्न 12. मालयांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर – जो कल्पवृक्ष विभिन्न प्रकार के सुगंधित फूलों से बनी 16000 प्रकार की मालादि प्रदान करते हैं वे मालयांग कल्पवृक्ष हैं। जैसे–फूलमाला, हार आदि।

प्रश्न 13. ज्योतिरांग कल्पवृक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर - जो कल्पवृक्ष करोड़ों सूर्य-चन्द्र के प्रकाश से भी अधिक तेज प्रदान करने वाले होते हैं वे ज्योतिरांग कल्पवृक्ष हैं।

प्रश्न 14. भोगभूमि के कितने भेद हैं?

उत्तर - भोगभूमि के मुख्य 3 भेद हैं -

(1) उत्तम भोगभूमि (2) मध्यम भोगभूमि (3) जघन्य भोगभूमि

प्रश्न 15. उत्तम भोगभूमि किसे कहते हैं तथा ये कितनी होती हैं?

उत्तर - जहाँ पर स्त्री-पुरुष युगल 21 दिन में यौवनावस्था को प्राप्त होकर, 3 दिन के बाद बेर बराबर भोजन करते हैं। जिनकी आयु 3 पल्य, शरीर की ऊँचाई 3 कोस तथा वर्ण स्वर्ण के समान होता है। उसे उत्तम भोगभूमि कहते हैं। ये 10 होती हैं। ये 5 विदेह क्षेत्र के देवकुरु-उत्तरकुरु संबंधी 5-5 होती हैं।

प्रश्न 16. मध्यम भोगभूमि किसे कहते हैं तथा ये कितनी होती हैं?

उत्तर - जहाँ पर स्त्री-पुरुष युगल 35 दिन में यौवनावस्था को प्राप्त करके, 2 दिन बाद बहेड़ा बराबर भोजन करते हैं। जिनकी आयु 2 पल्य तथा शरीर की ऊँचाई 2 कोस तथा वर्ण चाँदी के समान होता है। उसे मध्यम भोगभूमि कहते हैं। ये 10 होती हैं। ये पाँच हरि और पाँच रम्यक क्षेत्र में होती है।

प्रश्न 17. जघन्य भोगभूमि किसे कहते हैं तथा ये कितनी होती हैं?

उत्तर - जहाँ पर स्त्री-पुरुष 49 दिन में यौवनावस्था को प्राप्त करके, 1 दिन के बाद आंवला बराबर भोजन करते हैं जिनकी आयु 1 पल्य तथा शरीर की ऊँचाई 1 कोस तथा वर्ण श्याम होता है उसे जघन्य भोगभूमि कहते हैं। ये 10 होती हैं। ये पाँच हैमवत, 5 हैरण्यवत क्षेत्र में रहती हैं।

प्रश्न 18. कुल कितनी भोगभूमियाँ होती है?

उत्तर - कुल 30 भोगभूमियाँ होती हैं अर्थात् 10 उत्तम भोगभूमि, 10 मध्यम भोगभूमि, 10 जघन्य भोगभूमि।

प्रश्न 19. भोगभूमियों में क्या-क्या विशेषता होती है?

उत्तर - 1. भोगभूमि में विकलत्रय, जलचर आदि जीव नहीं होते।

2. यहाँ दिन-रात का भेद नहीं होता।

3. यहाँ सर्दी-गर्मी, रोग आदि नहीं होते।

4. यहाँ आपसी कलह, बैरभाव नहीं होता। सभी मंद कषायी होते हैं।

5. यहाँ स्त्री पुरुष युगल पैदा होते हैं तथा अंत में पुत्र-पुत्री को उत्पन्न कर पुरुष छींक से तथा स्त्री जम्हाई लेकर मर जाते हैं।

7. तिर्यंच भी युगल उत्पन्न होकर सुखपूर्वक रहते हैं।

8. संयमभाव नहीं होते, पर सम्यग्दर्शन हो सकता है।

9. यहाँ से मोक्ष नहीं हो सकता।

10. ये कला-विद्या में निपुण तथा ईर्ष्याभाव से रहित होते हैं।

प्रश्न 20. भोगभूमि में कौन उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - **उत्तम भोगभूमि** - जो उत्तम पात्रों (मुनियों) को आहारादि दान करते हैं।

मध्यम भोगभूमि - जो मध्यमपात्रों (आर्यिका, ऐलक-क्षुल्लक-क्षुल्लिका, प्रतिमाधारी) को आहार देते हैं।

जघन्य भोगभूमि - जो जघन्यपात्रों (अव्रती सम्यग्दृष्टि श्रावक) को आहार दान देते हैं।

प्रश्न 21. भोग भूमिज जीव मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - भोग भूमिज जीव मरकर भवनत्रिक, सौधर्म-ईशान स्वर्गों में उत्पन्न होते हैं। नरक, मनुष्य व तिर्यंच गति में उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्रश्न 22. भोगभूमि में कितने गुणस्थान व वेद होते हैं?

उत्तर - भोगभूमि में 1-4 गुणस्थान व पुरुष-स्त्री वेद होते हैं।

प्रश्नावली

1. भोगभूमि किसे कहते हैं? ये कितनी होती है?

2. कल्पवृक्ष के नाम व परिभाषा बताये?

3. भोगभूमि में कौन उत्पन्न होते हैं?

4. उत्तम-मध्यम-जघन्य भूमि में क्या-क्या अंतर होते हैं?

5. भोगभूमि की विशेषताएँ लिखें।

✪✪✪✪✪

पाठ-7

कर्मभूमि

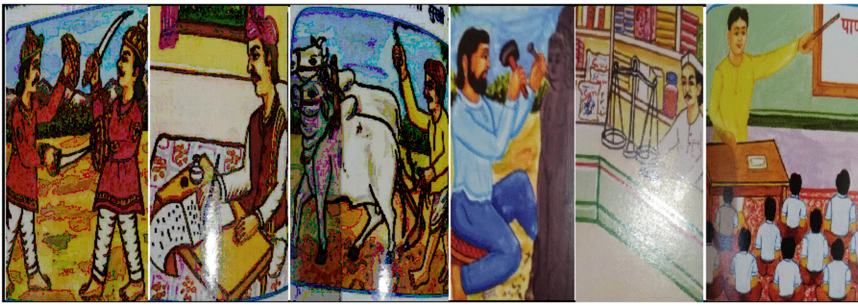

प्रश्न 1. कर्मभूमि किसे कहते हैं?

उत्तर - जहाँ पर षट्कर्मों के द्वारा आजीविका करनी पड़ती है उसे कर्मभूमि कहते हैं।

प्रश्न 2. षट्कर्म कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - असि, मसि, कृषि, शिल्पकला, वाणिज्य और विद्या ये षट्कर्म हैं।

प्रश्न 3. असिकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर - स्व-पर की रक्षा के लिए तलवार आदि शस्त्र धारण करना, चलाना जिसमें सिखाया गया वह असिकर्म है।

प्रश्न 4. मसिकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर - बहीखाता आदि लिखना मसिकर्म है।

प्रश्न 5. कृषिकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर - खेती करना, पशुपालन करना कृषि कर्म है।

प्रश्न 6. शिल्पकला कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर - हस्त कुशलता के काम करना शिल्पकला कर्म है। जैसे- लकड़ी, पत्थर आदि पर चित्र-मूर्ति बनाना।

प्रश्न 7. वाणिज्य कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर - वस्तुओं के माध्यम से लेन-देन आदि व्यापार करना वाणिज्यकर्म है।

प्रश्न 8. विद्याकर्म किसे कहते हैं?

उत्तर – लिखना-पढ़ना आदि सीखना विद्याकर्म है।

प्रश्न 9. षट्कर्म का उपदेश कब किसने दिया था?

उत्तर – जब भोगभूमि काल की समाप्ति का समय आने लगा, तब कल्पवृक्ष नष्ट हो गये, जिससे नगरों के लोग दुखित होकर महाराज नाभिराय तथा महाराज ऋषभदेव के पास आये और उन्होंने उन लोगों को आजीविका अर्थात् जीवनयापन के लिए षट्कर्म करने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 10. कर्मभूमि के कितने भेद हैं?

उत्तर – मुख्य 2 भेद हैं – 1 शाश्वत कर्मभूमि, 2. अशाश्वत कर्मभूमि।

प्रश्न 11. ढाईद्वीप में कुल कर्मभूमि कितनी होती है?

उत्तर – ढाईद्वीप में कुल 15 कर्मभूमि होती है।

1. पाँच भरत क्षेत्र संबंधी – अशाश्वत।
2. पाँच ऐरावत क्षेत्र संबंधी – अशाश्वत।
3. पाँच विदेह क्षेत्र संबंधी – शाश्वत।

प्रश्न 12. इसका नाम कर्मभूमि क्यों है?

उत्तर – क्योंकि कर्मभूमि में ही प्राणी शुभ-अशुभ कर्मों को करके उनके फलों को भोगता है। जैसे-कर्मभूमि के जीव ही अशुभ कर्मों के कारण सातवें नरक, पुण्यकर्मों के कारण सर्वार्थसिद्धि तथा शुभ-अशुभ कर्मों को नाशकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 13. शाश्वत कर्मभूमि किसे कहते हैं?

उत्तर – जहाँ सदैव कर्म करके आजीविका की जाती है या जहाँ षट्कालों की वृद्धि -हानि का प्रभाव नहीं होता उन्हें शाश्वत कर्मभूमि कहते हैं जैसे विदेह क्षेत्र।

प्रश्न 14. अशाश्वत कर्मभूमि किसे कहते हैं?

उत्तर – जहाँ उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल के अनुसार हानि-वृद्धि रूप परिवर्तन होता रहता है वे अशाश्वत कर्मभूमि हैं। जैसे-भरत-ऐरावत क्षेत्र।

प्रश्न 15. कर्मभूमि में जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं?

उत्तर - मनुष्यों के 1-14 तथा तिर्यंचों के 1-5 गुणस्थान होते हैं।

प्रश्न 16. भगवान ऋषभदेव ने षट्कर्म का उपदेश कब दिया था?

उत्तर - आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा (एकम्) को षट्कर्म का उपदेश दिया था।

प्रश्न 17. कर्मभूमि में कितने वेद होते हैं?

उत्तर - कर्मभूमि में पुरुष, स्त्री, नपुंसक तीनों वेद मनुष्य-तिर्यंचों को होते हैं।

प्रश्न 18. कर्मभूमि की विशेषताएँ लिखें?

उत्तर - 1. कर्मभूमि में सभी 169 पुण्य पुरुष उत्पन्न होते हैं।

2. कर्मभूमि में ही चारों पुरुषार्थों की सिद्धि हो सकती है।

3. चारों गति से आये जीव कर्मभूमि में उत्पन्न हो सकते हैं।

4. कर्मभूमिज जीव चारों तथा पंचम गति में कर्मानुसार जा सकते हैं।

5. कर्मभूमि में एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय सभी जीव होते हैं।

प्रश्नावली

1. कर्मभूमि किसे कहते हैं?

2. षट्कर्मों के नाम व परिभाषा लिखें?

3. षट्कर्म का उपदेश किसने-कब दिया?

4. कर्मभूमि के भेद लिखे? परिभाषा सहित।

5. कर्मभूमि कहाँ-कहाँ होती है?

✪✪✪✪✪

पाठ-8

कुलकर

प्रश्न 1. कुलकर किसे कहते हैं?

उत्तर – भोगभूमि का अंत होते समय तथा कर्मभूमि के प्रारंभकाल में विशेष परिवर्तन देखकर चकित और चिंतित मानव समाज को प्रयोजनभूत कार्यों का ज्ञान कराने वाले चौदह महापुरुष होते हैं उन्हें कुलकर कहते हैं। अथवा आर्यपुरुषों को कुल की भाँति इकट्ठे रहने का उपदेश देने से कुलकर कहलाते हैं। इन्हें मनु, कुलधर भी कहते हैं।

प्रश्न 2. कौन से जीव कुलकर होते हैं?

उत्तर – कुलकर पूर्वभव में विदेहक्षेत्रों में उच्चकुलीन महापुरुष थे। उन्होंने पात्रदान के द्वारा सम्यग्दर्शन के पूर्व ही मनुष्यायु का बंध करके बाद में जिनेन्द्र भगवान के समीप क्षायिक सम्यग्दर्शन तथा श्रुतज्ञान की प्राप्ति की थी इसलिए वे भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ अवधिज्ञान तथा निमित्तज्ञान को धारण करने वाले, मानव को उपदेश देने में कुशल कुलकर होते हैं।

प्रश्न 3. कुलकर कितने होते हैं? नाम बताइये।

उत्तर – कुलकर चौदह होते हैं – 1. प्रतिश्रुति, 2. सन्मति, 3. क्षेमंकर, 4. क्षेमंधर, 5. सीमंकर, 6. सीमंधर, 7. विमलवाहन, 8. चाक्षुष्मान, 9. यशस्वी, 10. अभिचन्द्र, 11. चन्द्राभ, 12. मरुदेव, 13. प्रसेनजित, 14. नाभिराय।

प्रश्न 4. प्रतिश्रुति कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - ज्योतिरांग वृक्षों का तेज कम होने से जब सूर्य-चन्द्र दिखने लगे जिसे देखकर लोग भयभीत होने लगे तब उन्होंने सूर्य-चन्द्र का ज्ञान कराकर उनके भय-निवारण का उपदेश दिया था।

प्रश्न 5. सन्मति कुलकर के द्वारा क्या उपदेश दिया गया?

उत्तर - जब ज्योतिरांग कलावृक्षों की प्रभा/तेज बुझते हुए दीपक के समान नष्ट होने के सम्मुख थी तब अंधकार होने से आकाश में नक्षत्रों तथा तारागणों का समूह दिखने लगा तब भयभीत प्रजा को उनका ज्ञान करा भय-निवारण का उपदेश दिया था।

प्रश्न 6. क्षेमंकर कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - क्रूर सींग तथा दाढ़ वाले हिंसक पशुओं से भयभीत प्रजा को उनसे सावधान रहने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 7. क्षेमंधर कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - जब सिंह, व्याघ्र आदि दुष्ट पशु अतिशय प्रबल और क्रोधी हो गये तब लकड़ी, लाठी आदि उपायों से इनसे रक्षा का उपदेश दिया।

प्रश्न 8. सीमंकर कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - जब कल्पवृक्ष अल्प हो गये तब आपसी विवाद निवारण के लिए उन्होंने कल्पवृक्षों की सीमा नियत करने का उपदेश दिया।

प्रश्न 9. सीमंधर कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने बतलाई गई कल्पवृक्षों की सीमा विशेष को भी अन्य वृक्ष तथा छोटी-छोटी झाड़ियों से चिन्हित करने का उपदेश दिया।

प्रश्न 10. विमलवाहन कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने हाथी, घोड़ा आदि पशुओं पर अंकुश लगाम आदि लगाकर सवारी करने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 11. चाक्षुष्मान कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - जब माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रियों का मुँह क्षणभर देखकर भयभीत होने लगे तब उन्होंने यथार्थ उपदेश देकर उनका भय दूर कर दिया था।

प्रश्न 12. यशस्वी कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने प्रजा को अपनी संतान का नामकरण तथा आशीर्वाद प्रदान करने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 13. अभिचन्द्र कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने प्रजा को अपनी संतानों को चन्द्रमा के सम्मुख खड़ा करके उन्हें क्रीड़ा कराने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 14. चन्द्राभ कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने प्रजा को बालक तथा माता-पिता का परस्पर संबंध बताकर सुखपूर्वक रहने का उपदेश दिया।

प्रश्न 15. मरुदेव कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - नदी, समुद्र रूप स्थानों में गमन हेतु छोटी-बड़ी नाव चलाने तथा पहाड़ पर चढ़ने हेतु सीढ़ियाँ बनाने का उपदेश दिया था।

प्रश्न 16. प्रसेनजित कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने जन्म के समय बालकों के शरीर से जरायु निकालने के उपाय का उपदेश दिया था।

प्रश्न 17. नाभिराज कुलकर ने क्या उपदेश दिया?

उत्तर - इन्होंने जन्म समय की नाभि के नाल काटने का उपदेश दिया था इसलिये ये नाभिराय कहलाये। महाराजा नाभिराय अजानबाहु (घुटने पर्यंत भुजाओं वाले) थे तब भारत देश का पुराना नाम उनके ही नाम पर अजनाभखण्ड/ अजनाभवर्ष के नाम से प्रसिद्ध था।

प्रश्न 18. कुलकरों के शरीर की ऊँचाई कितनी होती है?

उत्तर - प्रतिश्रुति कुलकर को आदि लेकर नाभिराज तक क्रमशः इनकी ऊँचाई - 1800 धनुष, 1300 धनुष, 800 धनुष, 775 धनुष, 750 धनुष, 725 धनुष, 700 धनुष, 675 धनुष, 650 धनुष, 625 धनुष, 600 धनुष, 575 धनुष, 550 धनुष, 525 धनुष थी।

प्रश्न 19. धनुष क्या होता है?

उत्तर - धनुष एक माप है। 24 अँगुल का एक हाथ तथा 4 हाथ का एक धनुष होता है।

प्रश्न 20. चौदह कुलकरों की आयु कितनी होती है?

उत्तर – प्रतिश्रुति को आदि लेकर क्रमशः कुलकरों की आयु इस प्रकार होती हैं –

1. पल्य का 10वाँ भाग
2. पल्य का 100वाँ भाग
3. पल्य का 1000वाँ भाग
4. पल्य का 10000वाँ भाग
5. पल्य का 1 लाख वाँ भाग
6. पल्य का 10 लाख वाँ भाग
7. पल्य का 1 करोड़ वाँ भाग
8. पल्य का 10 करोड़ वाँ भाग
9. पल्य का 100 करोड़ वाँ भाग
10. पल्य का 1 हजार करोड़ वाँ भाग
11. पल्य का 10 हजार करोड़ वाँ भाग
12. पल्य का 1 लाख करोड़ वाँ भाग
13. पल्य का 10 लाख करोड़ वाँ भाग
14. 1 पूर्व कोटि

प्रश्न 21. कुलकरों के शरीर का वर्ण कैसा होता है?

उत्तर – एक से सातवें, दसवें, बारहवें तथा चौदहवें कुलकर का वर्ण सुवर्ण के समान, आठवें, नौवें कुलकर का वर्ण श्याम तथा ग्यारहवें, तेरहवें कुलकर का वर्ण धवल होता है।

प्रश्न 22. अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी में कुलकर कब उत्पन्न होते हैं?

उत्तर – वर्तमान अवसर्पिणी में जब तृतीय सुखमा–दुखमा काल का जब पल्य का 8वाँ भाग शेष रह गया तब प्रतिश्रुति आदि कुलकर उत्पन्न हुए।

आगामी उत्सर्पिणी काल का जब द्वितीय दुखमा नामक काल का 21000 वर्षों में 1000 वर्ष शेष रहेगा तब कनक आदि 14 कुलकर होंगे।

प्रश्न 23. कौन से कुलकरों द्वारा क्या दण्ड व्यवस्था रखी गई?

उत्तर – प्रथम प्रतिश्रुति से आठवें चाक्षुष्मान तक 'हा' दण्ड की, नौवें यशस्वी से ग्यारहवें चन्द्राभ तक 'हा मा' दण्ड की तथा शेष तीन कुलकरों के समय 'हा मा धिक्' दण्ड की व्यवस्था थी।

प्रश्न 24. सभी कुलकर आयु पूर्ण होने पर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर - वैमानिक स्वर्गों में उत्पन्न होते हैं

प्रश्न 25. कुलकर क्या मोक्ष जाते हैं?

उत्तर - हाँ, ये 169 पुण्य पुरुषों में गिने जाते हैं अतः मोक्षगामी हैं।

प्रश्नावली

1. कुलकर किसे कहते हैं?
2. कुलकर कितने होते हैं? नाम बताइये।
3. किन्हीं 5 कुलकरों ने क्या उपदेश दिया? बताइये।
4. कुलकरों का जन्म कब होता है?
5. कुलकर कहाँ से आते हैं? आयु पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

✪✪✪✪✪

पाठ-9

शलाका पुण्य पुरुष

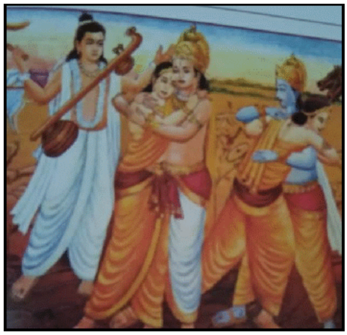

प्रश्न 1. शलाका महापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर - अंतिम कुलकर के पश्चात् पुण्योदय से भरतक्षेत्र में मनुष्यों में श्रेष्ठ और सम्पूर्ण लोक में प्रसिद्ध जो पुरुष उत्पन्न होते हैं वे शलाका महापुरुष कहलाते हैं। इनकी संख्या 63 होती है।

प्रश्न 2. 63 शलाका पुरुष कौन-कौनसे हैं?

उत्तर - 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव, 9 प्रतिनारायण इस प्रकार 63 महापुरुषों को त्रेसठ शलाका महापुरुष कहते हैं।

प्रश्न 3. ये त्रेसठ से अधिक या कम होते हैं क्या?

उत्तर - अधिक तो नहीं होते किन्तु हुण्डावसर्पिणी कालदोष के कारण इस दुषमा-सुषमा में 59 हुए हैं।

प्रश्न 4. शलाका पुरुषों में कौन से अधिक पदधारी हुये जिससे 63 की संख्या 59 रह गई?

उत्तर - 1. त्रिपृष्ठ नारायण आगे तीर्थंकर महावीर बने।

2. शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ तीर्थंकर ये चक्रवर्ती हुये।

अत: 1+3 = 4 (63 - 4 = 59)

प्रश्न 5. त्रेसठ शलाका पुरुष कहाँ-कहाँ से आकर जन्म लेते हैं?

उत्तर - 1. मनुष्य और तिर्यंच गति तथा भवनत्रिक से निकले जीव 63 शलाका पुरुष नहीं होते है।

2. नरकगति से निकले जीव बलदेव, नारायण, प्रतिनारायण, चक्रवर्ती पद को प्राप्त नहीं होते, मात्र तीर्थंकर बन सकते हैं।

3. विमानवासी देव ही शेष शलाका पुरुष होते हैं।

प्रश्न 6. त्रेसठ शलाका पुरुष क्या मोक्षगामी होते हैं?

उत्तर - हाँ, ये सभी भव्य होते हैं अतः नियम के अनुसार समयानुसार मोक्ष जाते हैं।

प्रश्न 7. शलाका पुरुषों का क्या परस्पर मिलन-दर्शन होता है?

उत्तर - नहीं, चक्रवर्ती-चक्रवर्ती, तीर्थंकर-तीर्थंकर, वासुदेव-वासुदेव, प्रतिवासुदेव - प्रतिवासुदेव, इनका परस्पर मिलन नहीं होता है।

प्रश्न 8. शलाका पुरुषों का क्या आहार-निहार होता है?

उत्तर - इनका आहार तो होता है किन्तु निहार नहीं होता।

प्रश्न 9. शलाका पुरुषों के दाढ़ी मूँछ के बाल होते हैं क्या?

उत्तर - नहीं, इनके दाढ़ी-मूँछ के बाल नहीं होते। ये सदैव यौवन अवस्था में रहते हैं।

प्रश्न 10. शलाका पुरुषों के शरीर का संहनन तथा संस्थान कैसा होता है?

उत्तर - सभी वज्रवृषभ नाराच संहनन से सहित, उत्तम शरीर के धारक, सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त और समचतुरस्र संस्थान से युक्त होते हैं।

प्रश्न 11. शलाका पुरुषों की आगामी कौन-कौन सी गति होती है?

उत्तर - तीर्थंकर - नियम से मोक्ष जाते हैं।
चक्रवर्ती - मोक्ष, स्वर्ग, नरक जाते हैं।
नारायण-प्रतिनारायण - नियम से नरक जाते हैं।
बलभद्र - मोक्ष तथा स्वर्ग जाते हैं।

प्रश्न 12. शलाका पुरुषों का जन्म कहाँ होता है?

उत्तर - शलाका पुरुषों का जन्म अढ़ाई द्वीप के आर्यखण्ड में ही होता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण, बलभद्र भूमि गोचरी होते हैं। प्रतिनारायण विद्याधर होते हैं।

प्रश्न 13. त्रेसठ शलाका पुरुष परम्परा कब से और कब तक चलेंगी?

उत्तर - त्रेसठ शलाका पुरुष की परम्परा अनादिकाल से है और अनंतकाल तक चलेगी। अर्थात् ये अनादिनिधन परम्परा है।

प्रश्न 14. त्रेसठ शलाका पुरुषों का जन्म किस काल में होता है?

उत्तर - त्रेसठ शलाका पुरुषों का जन्म प्रायः कर उत्सर्पिणी, अपसर्पिणी काल के दुखमा-सुखमा नामक काल में होता है। परन्तु हुण्डा सर्पिणी काल के कारण प्रथम तीर्थंकर, चक्रवर्ती तृतीयकाल में हुये हैं।

प्रश्न 15. वर्तमान कालीन त्रेसठ शलाका पुरुषों के नाम बताइये?

उत्तर - **24 तीर्थंकर** - आदिनाथजी, अजितनाथजी, संभवनाथजी, अभिनन्दननाथजी, सुमतिनाथजी, पद्मप्रभजी, सुपार्श्वनाथजी, चन्द्रप्रभजी, सुविधिनाथजी, शीतलनाथजी, श्रेयांसनाथजी, वासुपूज्यजी, विमलनाथजी, अनंतनाथजी, धर्मनाथजी, शान्तिनाथजी, कुन्थुनाथजी, अरहनाथजी, मल्लिनाथजी, मुनिसुव्रतनाथजी, नमिनाथजी, नेमिनाथजी, पार्श्वनाथजी, महावीरस्वामीजी।

12 चक्रवर्ती - भरत, सगर, मघवा, सनतकुमार, शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ, सुभौम, महापद्म, हरिषेण, जयसेन, ब्रह्मदत्त।

9 बलभद्र - विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दिमित्र, नन्दीसेन, रामचन्द्र, बलदेव।

9 नारायण - त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुण्डरीक, पुरुषदत्त, लक्ष्मण, श्रीकृष्ण।

9 प्रतिनारायण - अश्वग्रीव, तारक, मेरुक, निशुम्भ, मधु-कैटभ, बली, प्रहरण, रावण, जरासन्ध।

प्रश्न 16. पुण्य पुरुष कौन कहलाते हैं?

उत्तर - 63 शलाका पुरुषों में 24 तीर्थंकर के माता पिता-48, कामदेव-24, रूद्र-11 , कुलकर-14 और नारद-9 को जोड़ने पर 169 पुण्य पुरुष कहलाते हैं।

प्रश्न 17. चक्रवर्ती किसे कहते हैं उसकी विशेषताएँ लिखें?

उत्तर - जो एक आर्यखण्ड तथा 5 म्लेच्छखण्डों का अधिपति होता है उसे चक्रवर्ती कहते हैं।

1. चक्रवर्ती की काल, महाकाल, पाण्डु, मानव, शंख, पद्म, नैसर्प, पिंगल, नानारत्न नामक 9 निधियाँ होती है जो ऋतु के अनुकूल फल, वस्त्राभूषणादि प्रदान करती है।
2. चक्र, छत्र, खड्ग, दण्ड, काकिणी, मणि, चर्म, सेनापति, ग्रहपति, गज, अश्व, पुरोहित, स्थपति तथा युवती ये 14 रत्न होते हैं।
3. नगर, रत्न, निधि, सैन्य, भाजन, भोजन, शय्या, आसन, वाहन, नाटक से दशांग भोग होते है।
4. 32000 मुकुटबद्ध राजाओं तथा गणबद्ध देवों का अधिपति होता है।
5. 96000 रानियाँ, 84 लाख गज व योद्धा, 18 करोड़ घोड़े आदि होते हैं।

प्रश्न 18. बलभद्र की विशेषताएँ लिखें?

उत्तर -

1. बलभद्र, नारायण के बड़े भाई होते हैं।
2. हल, गदा, बाण एवं माला ये 4 रत्न होते हैं। इसकी 1000-1000 यक्ष रक्षा करते हैं।
3. इनकी 8000 रानियाँ होती है।
4. 16000 अधीन राजा, 8000 गणबद्ध देव इनकी आज्ञा मानते हैं।

5. ये अंत में दीक्षा लेकर स्वर्ग या मोक्ष जाते हैं।

प्रश्न 19. नारायण की विशेषताएँ लिखें?

उत्तर – 1. नारायण 1 आर्यखण्ड तथा दक्षिणी 2 मलेच्छखण्डों के स्वामी होते हैं।

2. सुदर्शन चक्र, गदा, खड्ग, शक्ति, धनुष, शंख, महामणि ये सात रत्न होते हैं।

3. इनकी 16000 रानियाँ होती है।

4. ये निदान सहित साधना के कारण नारायण होते हैं।

5. विषयभोगों में लिप्त रहने से नरकगामी होते हैं।

6. आगामी काल में मोक्ष जाते हैं।

प्रश्न 20. प्रतिनारायण की विशेषताएँ लिखें?

उत्तर – 1. ये विद्याधरों के अधिपति होते हैं।

2. नारायण का प्रतिशत्रु होता है।

3. त्रिखण्डों का अधिपति आदि विशेषता नारायण वत होती है।

4. निज चक्र से नारायण के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है।

5. मर कर नरक ही जाते हैं।

6. आगामी काल में मोक्ष जाते हैं।

प्रश्नावली

1. शलाका पुरुष किसे कहते हैं व कितने होते हैं?

2. शलाका पुरुषों की परम्परा कब से है तथा किस काल में उत्पत्ति होती है?

3. शलाका पुरुषों की आगामी कौनसी गति होती है?

4. शलाका पुरुष 63 होते है या कमाधिक?

5. शलाका पुरुषों की विशेषताएँ लिखें?

पाठ-11

तीर्थंकर ऋषभनाथ

हमारे प्रथम तीर्थंकर का नाम ऋषभनाथ है। तीर्थंकर ऋषभनाथ को आदिनाथ एवं वृषभनाथ नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म तीसरे काल (सुखमा-दुखमा) के अंत में जब 84 लाख पूर्व 3 वर्ष, 8 माह, 15 दिन शेष रहने पर अयोध्या में हुआ। आपके पिता अंतिम कुलकर महाराजा नाभिराय थे। आप अजानबाहु (घुटने पर्यंत भुजाओं वाले) थे। अतः तब आपके ही नाम से तत्कालीन भारत का पूरा नाम अजनाभ वर्ष या अजनाभखंड पड़ा था तथा माता मरूदेवी थी। आपकी आयु 84 लाख पूर्व की थी, शरीर का रंग सुवर्ण के समान, शरीर अवगाहना 500 धनुष थी। श्री आदिनाथ का विवाह रानी यशस्वती व सुनंदा से हुआ था। रानी यशस्वती के भरत सहित 100 पुत्र व ब्राह्मी नाम की पुत्री तथा रानी सुनंदा से बाहुबली तथा सुंदरी नाम की पुत्री हुई। आपका तथा आपके बड़े पुत्र भरत चक्रवर्ती का जन्म चैत्र वदी नवमी को हुआ। इन्हीं से भारत देश का नाम भारत पड़ा है। राजा भरत के पैर में छत्र, चक्र, तलवार आदि 14 चिह्न थे। पुत्र श्री बाहुबली कामदेव थे। श्री नाभिराय के वंश में वे स्वयं कुलकर तथा पुत्र तीर्थंकर व पोते चक्रवर्ती, कामदेव व गणधर थे।

जब कल्पवृक्षों ने अपना कार्य समाप्त जैसा कर दिया था। प्रजाजनों ने भगवान से पूछा-तब उन्होंने आषाढ मास की प्रतिपदा के दिन उन्हें 6 कार्यों की जानकारी दी-असि, मसि, कृषि, विद्या, व्यापार, शिल्पकारी (पशु पालन)। अतः उन्हें प्रजापति कहा जाता है। दोनों पुत्रियों को (ब्राह्मी सुन्दरी) अक्षर व अंक का ज्ञान कराया। वहाँ प्रजाजनों में गन्ने के रस का उपयोग किया जाता था अतः वे ईक्ष्वाकु कहलाने लगे। इनका कुमारकाल 20 लाख पूर्व तथा राज्य काल 63 लाख पूर्व का था।

श्री राजा आदिनाथ के गृहस्थावस्था में 83 लाख पूर्व समाप्त हो गये। सिर्फ एक लाख पूर्व की आयु शेष रही तब सौधर्म इंद्र को चिंता हुई कि भगवान दीक्षा कब लेंगे। जन्मोत्सव मनाने के दिन सौधर्म इंद्र ने नीलांजना को नृत्य करते समय मरण प्राप्त होना दिखलाया। यह देखते ही महाराज श्री आदिनाथ को आत्मज्ञान के साथ वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसी समय राज्यादि त्याग कर 4 हजार राजाओं ने भी महाराज आदिनाथ के साथ प्रयाग में वट वृक्ष के नीचे चैत्र वदी ९ को श्रमण दीक्षा ग्रहण की।

महामुनि श्री आदिनाथ तो 6 माह के उपवास की प्रतिज्ञा धारण कर मौन साधना में लीन हो गये, लेकिन अन्य राजा श्रमणचर्या से अनजान होने से भूख प्यास से आकुल-व्याकुल हो श्रमणचर्या के प्रतिकूल आचरण में उद्यत होने वाले थे तभी देवोपुनीत आकाशवाणी सुनकर कि यह दिगम्बर पवित्र वेश है इसको धारण कर ऐसी प्रवृति करना उचित नहीं है तब वे प्रतिज्ञाभंग कर कंदमूल आदि खाने लगे। महामुनि आदिनाथ 6 माह की प्रतिज्ञा पूर्ण होते ही वे आहारार्थ निकले तब आहारचर्या से अनभिज्ञ लोग नाना अमूल्य वस्त्राभूषण, अस्त्र, राजकुमारियाँ आदि वस्तुएँ भेंट करते थे, ऐसे ही जब 7 माह 9 दिन बीत गये। तब एक दिन वे हस्तिनापुर नगर में पहुंचे वहाँ के राजा श्रेयांस ने जैसे ही सुना तो तुरंत महल से बाहर आया, तभी मुनि मुद्रा को देखकर उसे पूर्व भव का जातिस्मरण हो गया कि जब मैं श्रीमति की पर्याय में था तब ये ही मेरे स्वामी वज्रजंघ चक्रवर्ती थे। हम दोनों ने ऐसे ही मुनि मुद्राधारी मुनिराज को नवधाभक्ति से आहार दिया था। तब राजा श्रेयांस और सोम ने विधिपूर्वक उनको पड़गाहन कर गन्ने के रस का आहार दिया इसी अक्षयतृतीया के दिन से दानतीर्थ का प्रवर्तन हुआ था।

महामुनि ऋषभनाथ को 1000 वर्ष की कठिन साधना के बाद फाल्गुन वदी 11 को पुरिमतालपुरी में शकट वन में केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। उनके ही वृषभसेन पुत्र प्रथम गणधर तथा पुत्री ब्राह्मी गणिनी आर्यिका बनी। विभिन्न स्थानों में समशरण सभा हुई प्रभु ने अपनी कल्याणकारी वाणी से प्रत्येक प्राणी को मोक्षमार्ग का उपदेश दिया जिसे सुन प्रतिज्ञा भंग कर चुके राजा पुनः धर्म में लीन हो गये। किन्तु भरत का पुत्र मारीचि, मैं 24वां तीर्थंकर बनने वाला हूँ इस अभिमान में आकर 363 कुमतों का प्रचार-प्रसार करने लगा।

भगवान ऋषभनाथ के केवलज्ञान के दिन भरत को पुत्र तथा चक्ररत्न की प्राप्ति हुई थी 60000 वर्ष की दिग्विजय यात्रा से लौटते समय जब चक्र का अयोध्या में प्रवेश नहीं हुआ तो कारण जानकर बाहुबली को छोड़ शेष भाईयों ने भरत की दासता स्वीकार नहीं करेगें ऐसा विचार कर पूर्व में हीं दीक्षा ग्रहण कर ली थी। पर बाहुबली का विचार था पिता जी ने राज्य दिया तो दासता क्यों? अतः दोनों के मध्य तीन जल, मल्ल, दृष्टि युद्ध हुए भरत की पराजय बाहुबली की जीत हुई फिर भी राज्यलक्ष्मी भाई-भाई में बैर का कारण है। ऐसा विचार कर बाहुबली ने दीक्षा ले 1 वर्ष तक निराहार रह खड़े होकर तपस्या की, तब चरणों में सर्पों ने निवास बना लिये, वन लताओं ने शरीर को आच्छादित कर लिया पश्चात आपको केवल ज्ञान व मोक्ष हुआ। भरत ने छह खंड में चक्रवर्ती की राज्य लक्ष्मी का भोग कर अंत में मुनि दीक्षा ले मोक्ष को प्राप्त किया। आपके ही नाम से इस देश का नाम भारत देश पड़ा।

भगवान ऋषभनाथ का जब आयु का 1 माह शेष रह गया तब उन्होंने कैलाशगिरी में आकर योगनिरोध प्रारंभ किया और ध्यानलीन प्रभु ने माघवदी 14 को सम्पूर्ण कर्मों को क्षयकर सिद्धपद प्राप्त किया था।

ऐसे प्रथम तीर्थंकर, आदि विधाता ऋषभनाथ भगवान सदा जयवंत रहें।

प्रश्नावली

1. **भगवान ऋषभनाथ का जन्म किस काल में कब हुआ था?**
2. **भगवान ऋषभनाथ के माता-पिता, पुत्र-पुत्री कौन-कौन थे?**
3. **भगवान ऋषभनाथ ने कौन से कर्मों का उपदेश दिया था?**
4. **भगवान ऋषभनाथ को वैराग्य कैसे हुआ तथा उन्होंने दीक्षा कब, कहाँ ली थी?**
5. **भगवान ऋषभनाथ का आहार कब और कहाँ हुआ था?**

पाठ-10

लेश्या

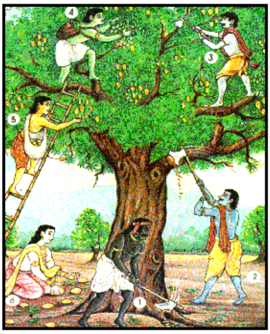

प्रश्न 1. लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर - जो आत्मा को कर्मों (कषायों) से लीपती हैं उसे लेश्या कहते हैं।

प्रश्न 2. लेश्या कितने प्रकार की होती है?

उत्तर - लेश्या मुख्यतः 2 प्रकार की होती है - 1. द्रव्य लेश्या, 2. भाव लेश्या।

प्रश्न 3. द्रव्य लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर - शरीर के वर्ण (रंग) को द्रव्य लेश्या कहते हैं। जैसे-कौआ की द्रव्य लेश्या कृष्ण है। ये 6 प्रकार की होती है।

प्रश्न 4. छहों लेश्याओं का वर्ण कैसा होता है?

उत्तर - कृष्ण लेश्या - भौंरे के समान।
नील लेश्या - नील की गोली, नीलमणि, मयूरकण्ठ के समान।
कापोत लेश्या - कबूतर के समान।
पीत लेश्या - तप्त सुवर्ण के समान।
पद्म लेश्या - पद्म (कमल) के समान।
शुक्ल लेश्या - कांस के फूल के समान।

प्रश्न 5. भाव लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर - कषाय के उदय से अनुरञ्जित योग प्रवृत्ति को भाव लेश्या कहते हैं। यह 6 प्रकार की होती है।

प्रश्न 6. भाव लेश्या के 6 ही भेद क्यों होते हैं?

उत्तर - क्योंकि कषायों का उदय तीव्रतम, तीव्रतर, तीव्र, मन्द, मन्दतर, मन्दतम छः प्रकार से होता है। इसलिए लेश्या के क्रमशः कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ये छः भेद हो हैं।

प्रश्न 7. कृष्ण लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर - जो तीव्र क्रोध करने वाला हो, बैर को न छोड़े, लड़ना जिसका स्वभाव हो, धर्म और दया रहित हो, दुष्ट हो, जो किसी के वश में न हो, ये सब कृष्ण लेश्या वालों के लक्षण है।

प्रश्न 8. नील लेश्या के लक्षण क्या है?

उत्तर - मन्द अर्थात् स्वच्छंद हो, वर्तमान कार्य करने में विवेक रहित हो, कलाचातुर्य से रहित हो, पंचेन्द्रिय के विषयों में लम्पट हो, मानी, मायावी, आलसी और भीरू हो, बहुत निद्रालु हो, परवंचणा में अतिदक्ष हो, धन-धान्य के संग्रह में तीव्र लालसा वाला हो, ये सब नील लेश्या वालों के लक्षण है।

प्रश्न 9. कापोत लेश्या का लक्षण क्या है?

उत्तर - जो दूसरों के ऊपर रोष करता हो, दूसरों की निंदा करता हो, दूषक बहुल हो, शोक बहुल हो, भय बहुल हो, दूसरों से ईर्ष्या करता हो, पर का पराभव करता हो, नाना प्रकार से अपनी प्रशंसा करता हो, किसी पर विश्वास न करता हो, अपने समान दूसरों को न मानता हो, स्तुति किये जाने पर अति-संतुष्ट हो, युद्ध में मरण का इच्छुक हो, अपनी हानि और वृद्धि को न जानता हो, स्तुति-प्रशंसा किये जाने पर बहुत धनादिक देवे और कर्त्तव्य-अकर्तव्य को कुछ भी न गिनता हो, ये सब कापोत लेश्या वालों के लक्षण है।

प्रश्न 10. पीत लेश्या के लक्षण क्या है?

उत्तर - जो अपने कर्तव्य-अकर्तव्य और सेव्य-असेव्य को जानता हो, सबमें समदर्शी हो, दान और दया में रत हो, मृदु स्वभावी और ज्ञानी हो, ये सब पीत लेश्या के लक्षण हैं।

प्रश्न 11. पद्म लेश्या के लक्षण क्या है?

उत्तर - जो त्यागी हो, भद्र हो, चोखा (सच्चा) हो, उत्तम कार्य करने वाला हो, बहुत भी अपराध या हानि होने पर क्षमा करने वाला हो, साधुजनों के गुणों के पूजन में निरत हो, ये सब पद्म लेश्या वालों के लक्षण है।

प्रश्न 12. शुक्ल लेश्या के लक्षण क्या है?

उत्तर - जो पक्षपात न करता हो, निदान न करता हो, सबमें समान व्यवहार करता हो, जिसे पर में राग-द्वेष या स्नेह न हो, ये सब शुक्ल लेश्या के लक्षण है।

प्रश्न 13. छहों भाव लेश्याओं को दृष्टान्त द्वारा समझाइये?

उत्तर - कोई पुरुष वृक्ष को जड़ मूल से उखाड़कर, कोई स्कंध से काटकर, कोई शाखाओं को काटकर, कोई उपशाखाओं को काटकर, कोई फलों को

तोड़कर, तथा कोई गिरे हुये फलों को बीनकर खाना चाहे तो उसके भाव उत्तरोत्तर विशुद्ध हैं। अत: ये भाव क्रमश: कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या युक्त व्यक्तियों के जानना चाहिए।

प्रश्न 14. मनुष्य गति में कौन-सी लेश्याएँ होती है?

उत्तर - कर्मभूमियाँ मनुष्यों के छहों लेश्या तथा भोगभूमि मनुष्यों के 3 शुभ लेश्या होती है।

प्रश्न 15. तिर्यंचगति में कौन-सी लेश्याएँ होती है?

उत्तर - एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, तिर्यंचों के तीन अशुभ, भोगभूमि तिर्यंचों के तीन शुभ लेश्या तथा कर्मभूमि तिर्यंचों के छहों लेश्या होती है।

प्रश्न 16. देवगति में कौनसी लेश्याएँ होती है?

उत्तर - भवनत्रिक में - जघन्य पीत लेश्या, सौधर्म-ईशान देवों में-मध्यम पीत, सानतकुमार-माहेन्द्र देवों में - उत्कृष्ट पीत-जघन्य पद्म, ब्रह्म-बह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ, शुक्र-महाशुक्र देवों में मध्यम पद्म, शतार-सहस्रार देवों में - उत्कृष्ट पद्म- जघन्य शुक्ल, आणत-नव ग्रैवेयक देवों में - मध्यम शुक्ल, 9 अनुदिश, 5 अनुत्तर देवों में परम शुक्ल लेश्या पाई जाती है।

प्रश्न 17. नरक गति में कौनसी लेश्याएँ होती है?

उत्तर - प्रथम नरक-जघन्य कापोत। दूसरे नरक - मध्यम कापोत। तीसरे नरक-उत्कृष्ट कापोत, जघन्य नील। चौथे नरक - मध्यम नील। पाँचवे नरक - उत्कृष्ट नील, जघन्य कृष्ण। छटवें नरक - मध्यम कृष्ण। सप्तम नरक - परम कृष्ण।

प्रश्न 18. कौनसी लेश्या के कौनसे गुणस्थान होते हैं?

उत्तर -	कृष्ण-नील-कापोत	-	1-4 गुणस्थान
	पीत-पद्म	-	1-7 गुणस्थान
	शुक्ल	-	1-13 गुणस्थान

प्रश्नावली

1. **लेश्या किसे कहते हैं?**
2. **लेश्या के कितने भेद होते हैं? लिखें।**
3. **किस लेश्या का कैसा वर्ण होता है?**
4. **छहों लेश्या का दृष्टांत लिखें?**
5. **कृष्ण-नील, पीत-पद्म लेश्या के लक्षण लिखें?**
6. **किस गति में कौन-कौनसी लेश्याएँ होती है?**

पाठ-12

श्री लघु स्वयंभू स्तोत्र

येन स्वयंबोधमयेन लोका, आश्वासिताःकेचन वित्तकार्ये।
प्रबोधिताः केचन मोक्ष-मार्गे, तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम्॥1॥

इन्द्रादिभिः क्षीरसमुद्र-तोयैः, संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेन्द्रः।
यःकामजेता जन-सौख्यकारी, तं शुद्ध-भावा-दजितं नमामि॥2॥

ध्यान-प्रबन्धः प्रभवेन येन, निहत्य कर्म-प्रकृतिः समस्ताः।
मुक्ति-स्वरूपां पदवीं प्रपेदे, तं संभवं नौमि महानुरागात्॥3॥

स्वप्ने यदीया जननी क्षपायां, गजादि वह्न्यन्तमिदं ददर्श।
यत्तात इत्याह गुरु परोऽयं, नौमि प्रमोदा-दभिनन्दनं तम्॥4॥

कुवादिवादं जयता महान्तं, नय प्रमाणै-र्वचनै-र्जगत्सु।
जैनं मतं विस्तरितं च येन, तं देवदेवं सुमतिं नमामि॥5॥

यस्यावतारे सति पितृधिष्णये, ववर्ष रत्नानि हरे-र्निदेशात्।
धनाधिपः षण्णव-मासपूर्वं, पद्मप्रभं तं प्रणमामि साधुम्॥6॥

नरेन्द्र-सर्पेश्वर नाक-नाथैर्, वाणी भवन्ति जगृहे स्वचित्ते।
यस्यात्म-बोधः प्रथितः सभाया-महं सुपार्श्वं ननु तं नमामि॥7॥

सत्प्रातिहार्यातिशय - प्रपन्नो, गुण-प्रवीणो हत-दोष संगः।
यो लोक-मोहान्ध-तमः प्रदीपश्, चन्दप्रभं तं प्रणमामि भावात्॥8॥

गुप्तित्रयं पञ्च महाव्रतानि, पञ्चोपदिष्टाः समितिश्च येन।
बभाण यो द्वादशधा तपांसि, तं पुष्पदंतं प्रणमामि देवम्॥9॥

ब्रह्मा-व्रतांतो जिन नायकेनोत्-तम क्षमादि-र्दशधापि धर्मः।
येन प्रयुक्तो व्रत-बंध-बुद्धया, तं शीतलं तीर्थंकरं नमामि॥10॥

गणे जनानन्दकरे धरान्ते, विध्वस्त-कोपे प्रशमैक-चित्ते।
यो द्वादशांगं श्रुतमादि-देश, श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशम्॥11॥

मुक्त्यंगनाया रचिता विशाला, रत्नत्रयी-शेखरता च येन।
यत्कंठ-मासाद्य बभूव श्रेष्ठा, तं वासुपूज्यं प्रणमामि वेगात्॥12॥

ज्ञानी विवेकी परम-स्वरूपी, ध्यानी व्रती प्राणि-हितोपदेशी।
मिथ्यात्व-घाती शिवसौख्य भोजी, बभूव यस्तं विमलं नमामि॥13॥

आभ्यंतरं बाह्य - मनेंकधा-यः, परिग्रहं सर्व-मपाचकार।
यो मार्ग-मुद्दिश्य हितं जनानां, वन्दे जिनं तं प्रणमाम्यनंतम्॥14॥

साद्र्धं पदार्था नव सप्त तत्त्वैः, पञ्चास्तिकायाश्च न कालकायाः।
षड्द्रव्यनिर्णीति-रलोकयुक्तिर्, येनोदिता तं प्रणमामि धर्मम्॥15॥

यश्चक्रवर्ती भुवि पञ्चमोऽभूच्, छ्री नंदनो-द्वादशको गुणानाम्।
निधिप्रभुः षोडशको जिनेन्द्रस्, तं शांतिनाथं प्रणमामि भेदात्॥16॥

प्रशंसितो यो न बिभर्ति हर्षं, विराधितो यो न करोति रोषं।
शीलं-व्रताद् ब्रह्मपदं गतो यस्, तं कुंथुनाथं प्रणमामि हर्षात्॥7॥

न संस्तुतो न प्रणतः सभायां, यः सेवितोऽन्तर्गण-पूरणाय।
पदच्युतैः केवलिभि-र्जिनस्य, देवाधिदेवं प्रणमाम्यरं तम्॥18॥

रत्नत्रयं पूर्व-भवान्तरे यो, व्रतं पवित्रं कृतवा-नशेषम्।
कायेन वाचा मनसा विशुद्धया, तं मल्लिनाथं प्रणमामि भक्त्या॥19॥

ब्रुवन्नमः सिद्ध-पदाय-वाक्य-मित्यग्रहीद्यः स्वयमेव लोचम्।
लौकान्तिकेभ्यःस्तवनं निशम्य, वन्दे जिनेशं मुनिसुव्रतं तम्॥20॥

विद्यावते तीर्थकराय तस्मा-याहार दानं ददतो विशेषात्।
गृहे नृपस्या-जनि रत्नवृष्टिः, स्तौमि प्रमाणान्-नयतो नमिं तम्॥21॥

राजीमतीं यः प्रविहाय मोक्षे, स्थितिं चकारा-पुनरागमाय।
सर्वेषु जीवेषु दया दधानस्, तं नेमिनाथं प्रणमामि भक्त्या॥22॥

सर्पाधिराजः कमठारितो-यैर्, ध्यान स्थितस्यैव फणावितानैः।
यस्योपसर्गं निरवर्त-यत्तं, नमामि पार्श्वं महतादरेण॥23॥

भवार्णवे जन्तु - समूहमेन - माकर्षयामास - हि - धर्म - पोतात्।
मज्जन्त-मुद्वीक्ष्य य येनसापि-श्रीवद्र्धमानं प्रणमाम्यहं तं॥24॥

यो धर्मं दशधा करोति पुरुषःस्त्री वा कृतोपस्कृतं,
सर्वज्ञ - ध्वनि - संभवं त्रिकरण -व्यापार - शुद्ध्यानिशम्।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिं दापयन्,
नित्यं स श्रियमातनोति सकलं स्वर्गापवर्ग - स्थितिम्॥25॥

(इति श्री लघु स्वयंभू स्तोत्र)

✪✪✪✪✪

पाठ-13

श्री गोम्मटेस-थुदि

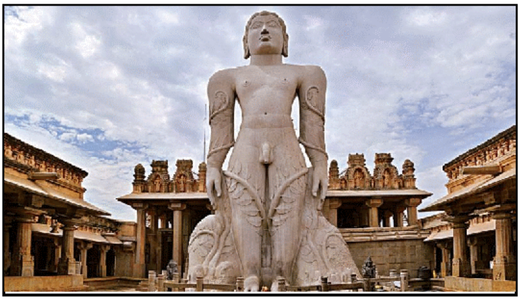

विसट्ट कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥1॥

अच्छाय-सच्छं जलकंत गण्डं, आबाहु-दोलंत-सुकण्णपासं।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥2॥

सुकण्ठ सोहा-जिय दिव्व-संखं, हिमालयुद्दाम-विसाल-कंधं।
सुपेक्खणिज्जायल सुट्ठु मज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥3॥

विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिंहामणिं सव्व-सुचेंदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥4॥

लया-समक्कंत-महासरीरं, भव्वावलीलद्ध-सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय-पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥5॥

दियंबरो जो ण च भीइ-जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि-जंतु-प्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥6॥

आसां ण जो पोक्खदि सच्छदिट्ठी, सोक्खे ण वाञ्छा हयदोसमूलं।
विराय-भावं भरहे-विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥7॥

उपाहि-मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं भय मोह-हारयं।
वस्सेय-पज्जंत-मुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥8॥

(इति श्री गोम्मटेस थुदि)

गुरु वंदना

श्रमणी आ. वियुक्तश्री

गुरुवर आप विराग हैं, राग द्वेष से दूर।
अनुरागी सबको करो, अचरज है भरपूर।।
गुरुवर श्यामल मेघ हो, गरजो बरसो नाथ।
लेकिन कभी न छोडना, मुझ अनाथ का हाथ।।

गुरु पूनम के चंद्रमा, मैं अधियारी रात।
मेरे जीवन में करो, विराग गुरु प्रकाश।।
जग तो दुख की धूप है, विराग सुख की छाँव।
साथ हमें लेकर चले, मुक्तिपुर के गाँव।।

गुरु ऐसे वैद्य हैं, करते हैं मद चूर।
आगम की देते दवा, भव भ्रम करते दूर।।
हिम्मत जब-जब टूटती, कोई न देता साथ।
तब आशा के सूर्य बनें, मेरे गुरु विराग ।।3।।

शिष्य भले ही दूर हो, मन से रहता पास।
देते हैं आशीष उसे, मेरे गुरु विराग।।
स्वार्थी हैं माता-पिता, स्वार्थी सब संसार।
गुरु विराग निःस्वार्थी, जीवन के आधार।।4।।

काम सभी बना रहे, खुद रहते निष्काम।
गुरु विराग सागर मेरे, इस युग के भगवान॥
त्याग-तपस्या, साधना, करते छोड़ प्रमाद।
राजहंस जिनधर्म के, मेरे गुरु विराग ।। 5।।

नौ करोड़ में तीन कम, जितने हैं मुनिराज।
उन सबके हम भक्त बनें, कहते गुरु विराग।।
श्रावक का कर्त्तव्य है, श्रमणों का सम्मान।
पथ, संघ और परंपरा मत देखो नादान ।। 6 ।।

पानी पीना छानकर, वाणी कहिए तौल।
बार-बार फिर न मिले, जैनधर्म अनमोल।।
सूर्योदय से पूर्व जो, उठता बिना प्रमाद।
मिलता उसे अपूर्व है, सरस्वती-प्रसाद।।7।।

हे गुरुवर आशीष दो, पायें सम्यग्ज्ञान।
प्रज्ञा शिरोमणि आप है, हम बच्चे नादान।।
हर्षित होते हम सभी, देख गुरु मुस्कान।
हाथ उठा आशीष दें, मिल जाता वरदान ।।8।।

मयूर पिच्छी धारते, रखे कमंडल साथ।
आगम की भाषा कहें, मेरे गुरु विराग।।
बिना गुरु के जिंदगी, बिना ड्राइवर कार।
कब किस गड्ढे में गिरे, हो जाए बेकार ।।9।।

योगी बनना श्रेष्ठ है, उपयोगी है मध्यम।
दुरूपयोगी न बनो, करके काम अधम।।
पढ़ें लिखें आगे बढ़ें, लक्ष्य बने आसान।
लेकिन हम भूलें नहीं, गुरु विराग का नाम।।10।।

घड़ी सदा टिक-टिक करे, रूक कर ना लें श्वांस।
श्वांस सदा क्या साथ हो, करना मत विश्वास।।
काम कोई ऐसा करें, बने स्वयं पहचान।
मात-पिता और देश का, करना ऊँचा नाम।।11।।

अच्छे बच्चे हम सभी मंदिर आते रोज।
लड़ाई-झगड़े न करें, अच्छी रखते सोच।।
जहाँ गुरु ने जन्म लिया, बना विरागोदय।
नगर पथरिया कह रहा, गुरु विराग की जय।।12।।

मन से हिम्मत हारना, कायर का है काम।
गिर-गिर भी उठ जाना, वीरों की पहचान।
व्रत-संयम जप-नियम में, अचल मेरू गुरूदेव।
निज समान गुण दीजिए, हर कर सारे ऐब।।13।।

एक अंजलि पानी भला, दूर करे जो प्यास।
सागर का खारा सलिल, अभिमानी का साथ।
दोनों हाथों दान दें, हो मुख से गुणगान।
सुख-दुख में एक रहें, चेहरे पे मुस्कान।।14।।

सपने ऊँचे देखना, मात्र नहीं पर्याप्त।
भाग्य जगाता है सदा, व्यक्ति का पुरूषार्थ।।
नित करते गुरु वंदना, गुरु भक्ति के साथ।
उनको मिलता है सदा, गुरु का आशीर्वाद।।15।।

खिलता यह जीवन रहे, निर्विकार बेदाग।
देते शुभ आशीष रहें, मेरे गुरु विराग।।16।।

नोट : पाठशाला में प्रतिदिन गुरु वंदना का पाठ करें।

✪✪✪✪✪

उपसर्ग विजेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

सं.	नाम	मूल्य
1.	संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1-2	150
2.	संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1-2	185
3.	संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (लिंगपाहुड)	
4.	संस्कृत श्रमण सम्बोधिनी टीका (शील पाहुड)	
5.	शास्त्रानुसार समुच्चय ग्रंथ पर चूर्णिसूत्र	
6.	शुद्धोपयोग	40
7.	सम्यग्दर्शन	35
8.	णम चक्खू साहू	25
9.	सल्लेखना से समाधि	30
	(शोधपूर्ण साहित्य)	
10.	संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20
11.	परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी)	45
12.	सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म	30
13.	तीर्थंकर दिव्य दर्शन	30
14.	तीर्थंकर दर्शन	
15.	व्यसन विचार	100
16.	फूल नहीं, हैं काँटे	
17.	संस्कार सुरभि (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी)	18
18.	जिनेन्द्र, दर्शन, जिनेन्द्र पूजन	10
19.	आध्यात्मिक शंका-समाधान	30
20.	आध्यात्मिक तत्व-चर्चा	40
21.	श्रमण आहारचर्या	50
	(चिन्तन साहित्य)	
22.	चैतन्य चिन्तन भाग-1	15
23.	चैतन्य चिन्तन भाग-2	15
24.	चैतन्य चिन्तन भाग-3	15
	(बालोपयोगी साहित्य)	
25.	बाल विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़)	10
26.	बाल विज्ञान भाग-2 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
27.	बाल विज्ञान भाग-3	10
28.	बाल विज्ञान भाग-4	10
29.	कर्म विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
30.	कर्म विज्ञान भाग-2	10
31.	कर्म विज्ञान भाग-3	10
	कथा साहित्य	
32.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-1	30
33.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-2	30
	(अनुवाद साहित्य)	
34.	वारसाणुवेक्खा	
35.	परमरत्नार्चना संग्रह	20
36.	सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)	10
	पद्य साहित्य	
37.	प्राकृत भक्ति संग्रह	
38.	भावों के विशुद्ध क्षण	15
39.	मुक्तकाञ्जलि भाग-1	15
40.	मुक्तकाञ्जलि भाग-2	15
41.	नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	
	(संकलित/सम्पादित साहित्य)	
42.	साधना से समाधि	20
43.	विमल नित्य पाठावलि	25
44.	आराधना	35
45.	सुभाषित संग्रह	40
46.	आप्त अर्चना	
47.	मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तासर)	65
48.	साधना	10
48.	अनुप्रेक्षा	10
50.	जिनागम दीप	251
51.	सम्मेद शिखर विधान	
52.	चारित्र शुद्धि व्रत	25
53.	करूणामूर्ति सन्त	100
54.	तपस्वी सम्राट	10
55.	यज्ञोपवीत विधि	
56.	साधना के सोपान	
57.	पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी	100
58.	स्तोत्र भारती	51
59.	छहढ़ाला	20

सं.	नाम	मूल्य
60.	इष्टोपदेश	20
61.	द्रव्यसंग्रह	20
62.	तत्वार्थसूत्र	30
	(एकांकी/नाटक साहित्य)	
63.	सत्यमित्र-सत्यदृष्टि	
64.	प्रद्युम्न हरण	
	(पूज्य आचार्यश्री पर आधारित साहित्य)	
65.	विरागाभिवंदन अभिनंदन I, II	
66.	निस्पृही संत भाग-1-2	60
67.	विराग सेतु (महाकाव्य) (हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) भाग-1	100
68.	विराग सेतु (महाकाव्य) भाग-2	
69.	संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर	65
70.	कमल से महाकमल	
71.	घटनायें ये जीवन की	80
72.	दिगम्बरत्व के चितेरे	150
73.	विराग सिंधु की उर्मियाँ	15
74.	विराग वाटिका	41
75.	भक्ति की झंकार	25
76.	विराग काव्यांजलि	
77.	आत्मान्वेषी	
78.	विरागादर्श	
79.	विराग अर्चना	
	(पू. आचार्यश्री के प्रवचन पर आधारित साहित्य)	
80.	धर्म पीयूष	30
81.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40
82.	दूर नहीं है मंजिल	30
83.	उड़ रे पंछी	10
84.	तीर्थंकर वर्धमान	15
85.	पहले देव-पूजा फिर काम दूजा	25
86.	तीर्थंकर ऐसे बनो (सोलहकारण प्रवचन)	60
87.	तट की ओर	10
88.	सिर्फ दो प्रवचन	10
89.	इष्टोपदेश (प्रवचन)	
90.	मानतुंग की अमरभक्ति (भक्तामर प्रवचन)	150
91.	कल्याणक महोत्सव	20
92.	दान तीर्थ	20

सं.	नाम	मूल्य
93.	धर्म के दश सोपान	20
94.	जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो	20
95.	बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10
96.	प्रवचन वर्षा	25
97.	कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं	25
98.	श्रद्धा प्रसून (अष्ट अंग प्रवचन)	25
99.	मोक्ष की राहें	25
100.	विरागामृत-1	30
101.	विरागामृत-2	
102.	समाधि तंत्र (प्रवचन)	
103.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-1	20
104.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-2	20
105.	समयोचित्, शिक्षायें भाग-3	20
106.	विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	5
107.	रजत पुष्प	51
108.	कहानी सबसे पुरानी	30
109.	अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	10
110.	संस्कार की लहरें	20
111.	चलो चलें प्रभु दर्शन को	30
112.	आध्यात्मिक धर्म प्रवचन	30
113.	घर-घर की कहानी	30
114.	वारसाणुवेक्खा प्रवचन	125
115.	पर्यूषण निधि	15
116.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम्	200
117.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 2. दानोपदेशम्	40
118.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत्	50
119.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 4-5. एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85
120.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 6. उपासक संस्कार	60
121.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60
122.	पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 8-9. सिद्धस्तुति एवं आलोचना	85
123.	आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10

सं.	नाम	मूल्य
124.	मेरी भावना-प्रवचन	
125.	फॉर यूथ प्रोग्रेस-I	30
126.	फॉर यूथ प्रोग्रेस- II	50
127.	रत्नकरण्डक श्रावकाचार भाग-1	100
128.	सामायिक पाठ - प्रवचन	85
129.	विराग संध्या	20
130.	स्वर्ग पुष्प	30
131.	षट्लेश्या प्रवचन अपनी-2 आभायें	
132.	ऐसे बनायें घर को स्वर्ग	
133.	क्यूँ इतना अभिमान है... (4मद प्रवचन)	30
134.	सिद्धों का खजाना (8 गुण प्रवचन)	30
135.	अपने नैतिक कर्त्तव्य	30
136.	श्रुतज्ञानवर्धक विधान	20
137.	भगवान महावीर विधान	
138.	अंग-अंग से झरता बोध (बाहुबली स्तुती पू.)	

Video DVD

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयन्ती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा
4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी, समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें-श्रवणबेलगोला
14. 11 दीक्षायें-गांधीनगर
15. 8 दीक्षायें-गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें-किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें-उदयपुर
18. 25 दीक्षायें-जयपुर
19. 8 दीक्षायें-इन्दौर
20. स्वर्णिम जन्म जयन्ती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (वारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र, पद्मनंदि पंचविंशतिका भाग-1-14)
22. मातृभक्ति
23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

Audio DVD

1. श्यामा के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरूवर का जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विरागसागर नमोस्तु ते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरु के गायेंगे
9. जियो हजारों साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. स्वर्णिम जयन्ती याद रहेगी
14. हे सन्मति-सन्मति दो
15. प्रथम सूरि बुंदेलखण्ड के
16. पू.आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज पूजा
17. गुरू नाम की धूम मची है

साहित्य प्राप्ति स्थान

1. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर, बताश बाजार, भिण्ड (म.प्र.) सम्पर्क सूत्रः पं. वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220)
2. आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113, जिला-सागर (म.प्र.)
3. विराग फाउण्डेशन, द्वारा-श्री अरुण कोटड़िया, II-A विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380013 (गुजरात)
4. श्रीमति पुष्पा पाटनी, 574, शांतिनगर, जैन मंदिर के सामने, गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.) मो. 09460765050
5. श्री मनीष पाटनी, नया बाजार, 54 धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज) मो. 09414002306
6. श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु व्यास मोहता हॉस्पिटल के पास, मोहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475
7. राष्ट्रीय विराग युवा मंच, अध्यक्ष-श्री राजेश जैन अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970

संगोष्ठी एवं स्मारिका साहित्य

बीना चातुमासिक स्मारिका	-	(1994)
सम्यग्दर्शन संगोष्ठी	-	तारंगा (2010)
विराग अनुभूति	-	लोहारिया (2011)
सर्वोदया टीका अनुशोलन	-	जयपुर (2012)
स्वर्णिम विरागांजलि	-	''
विराग पुष्प पुञ्ज	-	इन्दौर (2013)